੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् नानकशाही ५४७
वर्ष ९ अंक ३ नवंबर 2015

संपादक : सिमरजीत सिंह

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥रहाउ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥ *(पन्ना ६३३)*

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब राग सोरठि में अंकित इस पावन शबद के माध्यम से अकाल पुरख परमात्मा के साथ एकाकार करने वाले विलक्षण सौभाग्य-जन के मुख्य गुणों की निशानदेही करते हुए मनुष्य-मात्र को दुर्लभ मानस जन्म में इस रूहानी मंज़िल को प्राप्त करने के लिए उसका आदर्श मार्गदर्शन करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि परमात्मा से उस मनुष्य का ही एकाकार हुआ माना जा सकता है जो मनुष्य दुख की स्थिति में दुखी नहीं होता अथवा घबराता नहीं। ऐसा मनुष्य सुख के साथ लगाव ही नहीं रखता, उसके मन में डर भी नहीं होता; वह सोने को भी माटी के तुल्य मानता है अथवा संसार की दृष्टि में सबसे मूल्यवान वस्तुओं को वह स्थिर न रहने वाली समझता है।

परमात्मा के साथ एकाकार हुआ व्यक्ति किसी की बुराई करने से ऊपर होता है तथा वह स्वयं की दूसरों द्वारा स्तुति किये जाने की चाहत से भी बचा होता है। साथ ही उसमें लालच, लगाव एवं अहंकार भी नहीं होता। वह खुशी और गमी दोनों में ही निर्लेप रहता है अर्थात् समतोल बनाये रखता है। वह अपने सम्मान का इच्छुक नहीं होता और न ही किसी द्वारा अपमानित किये जाने अथवा अपशब्द बोले जाने पर दुख महसूस करता है। वह आशा तथा मनोकामना का परित्याग कर देता है और संसार से अर्थात् सीमा से बढ़कर सांसारिकता से उदासीन रहता है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जो मनुष्य काम और क्रोध को हृदय में आने की अनुमति ही नहीं देता, उस हृदय में परमात्मा का निवास होता है। जिस मनुष्य पर सच्चे गुरु की कृपा हो जाती है वही रूहानी मंज़िल को पाने की ऊपर वर्णित युक्ति को पहचानता है। गुरु जी कथन करते हैं कि वह मनुष्य परमात्मा के साथ इस प्रकार लीन हो जाता है जैसे पानी के साथ पानी मिल जाता है अर्थात् उसमें तथा मालिक परमात्मा में तनिक-सा भी अंतर नहीं रहता। निष्कर्ष रूप में सतिगुरु के पावन कथनों का तत्व-सार यह है कि मनुष्य जन्म में ही परमात्मा के साथ पूर्ण मिलाप हो सकता है। इसके लिए ऊंचे रूहानी गुणों का संचार करने का गुरमति मार्ग अपनाना होगा।

घिनौनी चालों से सावधान रहने की आवश्यकता

शुरू से ही संसार में ऐसे मनुष्यों की बहुसंख्या रही है जो अपने स्वार्थी स्वभाव के कारण दूसरों का हक छीनते रहे हैं। इतिहास ऐसी करतूतों की कहानियों से भरा पड़ा है। पहले मनुष्य ने पशुओं को वश में करके उनसे काम लेना आरंभ किया। जब वह बढ़ती उम्र के कारण काम देने से मज़बूर होता तो उसे सड़कों पर ठोकरें खाने के लिए छोड़ दिया जाता। ताकतवर मनुष्य अपने से कमज़ोर मनुष्यों को गुलाम बनाकर उनसे अपनी सेवा करवाता रहा। ऐसा करने का कारण आर्थिक खुशहाली एवं मौज-मस्ती का जीवन व्यतीत करना था। फिर बहुत-से ताकतवरों ने मिलकर फौजें कायम कर लीं। कमज़ोरों को अपने अधीन करके अपने-अपने इलाकों की सीमाएं बढ़ानी शुरू कर दीं, किंतु मनुष्य की मानसिक भूख कभी नहीं मिट सकी। कइयों ने तो पूरी दुनिया पर ही अपनी हकूमत करने की ठानी। इस कार्य के लिए उन्होंने असंख्य बेगुनाहों का खून बहाया और चारों ओर अंधेरगर्दी मचा दी। ऐसे ही समय में प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी भूले-भटकों को सत्य का मार्ग दिखाने के लिए प्रकट हुए। भाई गुरदास जी इसी दृष्टांत के प्रति लिखते हैं-- *"सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।"* एक-दूसरे का हक छीनने के प्रति गुरबाणी का फरमान है-- *"हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥"* श्री गुरु नानक देव जी ने अपने रास्ते से भटक चुकी जनसाधारण को और उनके अगुओं को जगह-जगह जाकर सत्य का मार्ग दिखाया तथा दीन-दुखियों का भला करने में लगाया। इस शृंखला को आगे बढ़ाते हुए दूसरे गुरु साहिबान ने भी जनसाधारण की भलाई के लिए सत्य पर पहरा देने वाला एक वर्ग खड़ा कर लिया। लालची एवं दुनिया में अंधेरगर्दी फैलाने वाले लोगों की नज़रों में ये कांटे की तरह चुभने लग गए। इसके परिणामत: श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी हक-सच की रखवाली के लिए एक संत-सिपाही की ज़रूरत को महसूस करते हुए शस्त्रधारी सिक्खों को अस्तित्व में लाये। अब सच की रक्षा के लिए मर-मिटने वालों की फौज तैयार हो गयी। दूसरी तरफ कौम को गुलाम बनाने का प्रचलन भी बढ़ता गया। सत्ताधारियों ने तलवार के बल पर उनसे अनैच्छिक टैक्स उगराकर, आर्थिक रूप से कमज़ोर करके अपने धर्म में मिलाकर गुलाम बनाना शुरू कर दिया। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने उनके इस ज़ालिमाना कृत्य के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की। परिणामत: गुरु जी को दिल्ली के चांदनी चौंक में बलिदान देना पड़ा। गुरु जी की कुर्बानी रंग लायी। दशम पातशाह द्वारा साजी खालसा फौज जुल्म के विरुद्ध डट गयी तथा बाबा बंदा सिंघ बहादर की जत्थेदारी तले हलेमी राज्य कायम हो गया। यह इंसाफ-पसंद लोगों की विजय थी। इसी तरह खालसा फौजों ने अति यातनाओं को झेलते हुए लोगों के लिए उनके अपने राज्य के रूप में सिक्ख राज्य कायम किया। किंतु घटिया वृत्ति के लोगों को यह राज्य कब सहनीय था? उन्होंने अपनी भेड़िया चालें चलकर इस राज्य में फूट डालकर इसको खत्म कर दिया। परिणामस्वरूप भारतवासी फिर से हाकिमों (अंग्रेजों) के गुलाम हो गए। इन सबके बावजूद श्री गुरु नानक देव जी की सत्य-मार्ग पर चलने की दी

गयी जीवन-घुट्टी इन पंजाबी लोगों की रगों में समा चुकी थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा की गयी पालना सदका यह खालसा फौज जुल्म के आगे झुकने वाली कहां थी? अत: इनके द्वारा सत्य के मार्ग पर चलते हुए मानवीय आज़ादी के लिए कुर्बानियां करने का दौर फिर से शुरू हो गया। यही कारण है कि अकेले पंजाब के लिए ही नहीं बल्कि समस्त भारत के लोगों की आज़ादी के लिए सबसे ज्यादा कुर्बानियां पंजाबी शूरवीरों ने ही कीं। इनकी पृष्ठभूमि में गुरु साहिबान की शिक्षाओं का ही प्रभाव था।

समय के साथ-साथ लालच वृत्ति वाले लोगों की लालची मानसिकता फिर बढ़ने लगी। बहुसंख्यक भाईचारे के लोगों ने अल्पसंख्यक लोगों को दबाकर रखने की गलतफहमी मन में पाल ली। परिणामत: १९८४ ई में देश की राजधानी दिल्ली में एक बहुसंख्यक वर्ग के लोगों द्वारा सरकार की शह पर अल्पसंख्यक वर्ग को लूटा और मारा-पीटा गया। इनको आर्थिक तौर पर कमज़ोर करने के लिए इनकी जायदादें तक लूट लीं। गलों में टायर डालकर इनको बेरहमी से जलाया गया। इनकी बहनों-बेटियों का अपमान किया गया। इस समय में ऐसे भले सज्जन भी थे जिन्होंने अभी गुरु साहिबान की शिक्षाओं को भुलाया नहीं था। इन भले पुरुषों ने इस मुश्किल समय में इन संकटग्रस्त लोगों की मदद भी की।

आज के दौर में फिर अंतर्दृष्टि डालने की आवश्यकता है। मनुष्य अपने अहंभाव के अधीन दूसरों को गुलाम बनाता-बनाता प्रकृति को भी अपना गुलाम बनाने लग गया है। भू-माफिया, नशा-माफिया, देह-व्यापार के अड्डे, मानवीय-समगलिंग, रिश्वतखोरी और अन्य भी कई प्रकार के माफिये अस्तित्व में आ गए हैं। इस बरताव से चाहे मनुष्य ने तिजोरियां भरकर अल्प समय में ही खुशफहमी हासिल कर ली है परंतु साथ ही पूरी दुनिया को नाशवानता की ओर भी धकेल दिया है। अपनी आर्थिक उन्नति की आड़ में जहां मनुष्य द्वारा फसलों पर किए जा रहे अनावश्यक ज़हर के प्रयोग ने देश के बहुत बड़े इलाके को कैंसर-पीड़ित इलाका होने का अभिशाप दिला दिया है। रिश्वतखोरी ने हमारे रक्षकों का खून ही सफेद कर दिया है। इंसाफ के लिए मनुष्य कोट-कचहरी में धक्के खाने के लिए मज़बूर है। इन सभी अलामतों से छुटकारा पाकर ही हम आज अच्छा समाज सृजित कर सकते हैं, जिसके लिए गुरबाणी हमारे लिए मार्गदर्शक है। गुरबाणी हमें सर्वसांझीवालता का संदेश देते है किंतु कुछ शरारती अनसरों को यह भी मंजूर नहीं उन्होंने अब गुरबाणी का अपमान करके अपने घटिया मनसूबों को अंजाम देना शुरू कर दिया है। उसके प्रति हमको सतर्क रहने की अत्यंत आवश्यकता है। आइए! गुरबाणी की रोशनी की अगुआई लेकर हम भाई-भाई मारने वाली जंग से बचें। गुरबाणी का फरमान है :

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥ *(पन्ना ३४५)*

परम गुरु-श्री गुरु नानक देव जी

-डॉ जगजीत कौर*

जब-जब सृष्टि पाप कर्म, अनाचार, अत्याचार और नैतिक मूल्यों के ह्रास से पीड़ित होती है, तो पारब्रह्म परमेश्वर किसी न किसी स्वरूप में त्राहि-त्राहि कर रहे जनमानस को शांति सूक्ष्म और सहज सुख का मार्ग दिखाने के लिए अवतरित होते हैं। इसी क्रम में संवत् १५२६ अर्थात् सन् १४६९ ई में गुर पारब्रह्म 'आदि जुगादि परम गुरु-श्री गुरु नानक देव जी ने राय भोए की तलवंडी में महिता कालू जी के घर अवतार लिया। बाबा नानक जी के जीवन को जानने के लिए पुरातन जनमसाखी भाई बाला जी जिसे स्वयं द्वितीय ज्योति श्री गुरु अंगद देव जी की स्वीकृति प्राप्त हुई, पुनः भाई गुरदास जी जिनकी बाणी स्वयं गुरु साहिबान द्वारा प्रमाणित सिद्ध हुई, तीसरे भट्ट कवि साहिबान जिनके गुरुदेव जी सम्बंधी उद्‌गारों को पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने स्वयं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी में मुहरबंद किया और इन सबसे ऊपर श्री गुरु अरजन देव जी के आदि गुरु श्री गुरु नानक देव जी के प्रति उच्चारित सवैय्ये महले पहिले के शीर्षक से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रकट भावानुभूतियों से इतर अन्य और कोई प्रमाणिक स्रोत नहीं है। हालांकि गुरु साहिब के जीवन, कार्य, बाणी, दर्शन सिद्धांत आदि को लेकर क्या भारतीय और क्या विदेशी विद्वान इतिहासकारों, साहित्य शोधकर्त्ताओं ने बहुत कुछ विद्ववता पूर्ण रुचि से लिखा है। किंतु मूल स्रोत ही इतने प्रमाणिक हैं कि अन्य शोध स्रोत उन्हीं पर आधारित प्रतीत होते हैं।

भट्ट कविगण श्री गुरु नानक देव जी को परम गुरु मानते हैं, जिस परम गुरु का यश गायन सारा संसार कर रहा है। इस परम गुरु का यश गायन अति गंभीर, धीर मति, सागर, योगी जंगम, इंद्र, प्रहिलाद, जनक सनक सनंदन आदि अनेक ऋषि-मुनि मुक्त कंठ से कर रहे हैं :

गावउ गुन परम गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥
गावहि गंभीर धीर मति सागर जोगी जंगम धिआनु धरे ॥
गावहि इंद्रादि भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि जाणिओ ॥
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ (पन्ना १३८९)

इस परम गुरु का यश गायन इसलिए किया जा रहा है क्योंकि वह स्वयं ब्रह्म स्वरूप है। ब्रह्म के अलौकिक द्वार से उसे भक्तिभाव की प्राप्ति हुई है। *'पहिला बाबे पाया बखसु दरि पिछोदे फिरि घालि कमाई।'* परम गुरु अकाल पुरख पारब्रह्म परमेश्वर के द्वार पर परखा गया है, तोला गया है और जब वह भक्तिस्वरूप के वज़न के बराबर तुला है; ब्रह्ममय भक्त स्वरूप सिद्ध हुआ है तो उसे परमशक्ति ने निवाजिश कर मात लोक में भेजा है। श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥
हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥१॥ (पन्ना १३८६)

उस अनंत अथाह परमशक्तिमान ब्रह्म की

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो ९४१२४-८०२६६*

आराधना करते-करते नानक स्वयं ब्रह्म समसरि हो गया है, इसलिए जैसे ब्रह्म के आश्चर्यपूर्ण कार्यों को देख भक्त जिज्ञासु विस्मादित हो उठते हैं, उस पर बलिहार जाने के सिवाय उसके बड़प्पन को आंकने का उनके पास अन्य कोई पैमाना, अन्य कोई मोहरा नहीं होता, उसी प्रकार इस परमगुरु नानक पर वे बलिहार हैं। हां! इतनी अवश्य घोषणा करते हैं :

हरि गुरु नानकु जिन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिओ ॥ *(पन्ना १३८६)*

श्री गुरु नानक देव जी के चरणों का स्पर्श करने वाला *'. . .ते इत उत सदा मुकते ॥'* क्योंकि परम गुरु निरंकार है, अछल है, पूरन अविनाशी है।

निरंकारु आकार अछल पूरन अबिनासी ॥
हरखवंत आनंत रूप निरमल बिगासी ॥
गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ॥
जा कउ होंहि क्रिपाल सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ *(पन्ना १३८६)*

ऐसा भगत दरि तुल ब्रहम समसरि संवत् १५२६ *बाबा नानक जनमिआ. . .* अनहद सबद परमेशर के दरबार वाजे तेंतीस करोड़ देवतिआं नमसकार कीआ, चउसठ जोगणी बवंजाह बीर, छिआं जतीआं चौरासीआं सिंघां, नवां नावां नवमसकार कीआ, सो वडा भगत जगत निसतारण कउ आइआ इसको नमसकार कीजीऐ जी। तब कालू खतरी जात वेदी तलवंडी राइ भोइ भट्टी दी वसदी विच वसदा आहा, ओथे जनम पाया (पुरातन जनम साखी)

'जगत निसतारण कउ आइआ' क्योंकि रुदन करती दुखी आर्तहीन जनमानस की सुणी पुकार दातार प्रभ गुर नानक जग माहि पठाइआ" जनमानस पुकार क्यों कर रहा था? क्योंकि समय के हालात ही इतने बिगड़ चुके थे। राजनीतिक पटल पर अव्यवस्था थी, सामाजिक जीवन में अति गिरावट आ चुकी थी, धर्म का कोई व्यवस्थित स्वरूप नहीं था। भाई गुरदास जी के शब्दों में :

कलि आई कुते मुही खाजु होइआ मुरदार गुसाई ॥
राजे पापु कमांवदे उलटी वाड़ खेत कोउ खाई ॥
परजा अंधी गिआन बिनु कूड़ कुसतु मुखहु आलाई ॥
चेले साज वजाइदे नचनि गुरु बहुत बिधि भाई ॥
(वार १:३०)

कुल मिलाकर हर प्रकार का पाखंड झूठ मिथ्याचार-जुल्म, धक्काशाही, कपट, कुरूपता समाज में फैली थी। गुरु साहिब के शब्दों में *"सरम धरम का डेरा दूरि नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥"* राजनीति पटल पर लोदी वंश का राज्य था जो ऐशो-इश्रत में मशगूल थे। मुगल बादशाह भारत पर चढ़ आया था, जिसने अंधाधुंध लूटपाट मारखसोट मचा रखी थी। स्त्रियों, बच्चों तक को नहीं छोड़ा था। भयंकर नर संहार, जिसे श्री गुरु नानक देव जी ने बताया *"पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो"* भयानक नर संहार जिसे श्री गुरु नानक देव जी ने 'मांसपुरी' नाम दिया। भारत की गरिमा स्त्री जाति का अपमान जिसे देख श्री गुरु नानक देव जी का हृदय पसीज उठा वाहिगुरु अकाल पुरख को उपालंभ दे डाला *'एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥'* वह स्त्री जाति *'जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥ से सिर काती मुंनअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥'* हे प्रभु! तुम तो सबके रखवाले हो फिर ऐसा क्यों हुआ ?

जब समाज की राजनीति व्यवस्थित न हो तो धर्म सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला कैसे स्थिर रह सकती है। धर्म के नाम पर हिंदुओं को जबरन मुसलमान बनाया जा रहा था, बचे हुए हिंदू अपनी चोटी और जाति संभालने में लगे थे। कर्मकांडों, पखंडों से प्रजा को ठग रहे थे। कुल क्या मुल्ला जोगी ब्राह्मण 'तीने उजाड़े के धंध'

Final

तीनों समाज के पथभ्रष्ट करने में लगे थे।

ऐसे में *"सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ। जिउ करि सूरज निकलिआ तारे छपे अंधेर पलोआ।"* कुछ समय तलवंडी में ध्यान मग्न सुलतानपुर लोधी में तकड़ी तोलता बाबा नानक पिता महिता कालू जी माता तृप्ता देवी जी बहन बेबे नानकी बहनोई जय राम पत्नि बीबी सुलक्षणी जी दो पुत्र बाबा श्री चंद और बाबा लखमीदास को वाहिगुरु के सहारे छोड़ जगत को सत्मार्ग दिखाने निकल पड़ा। बाल सखा भाई मरदाना साथ में, अति मधुर धुनों में रबाब बजाता। श्री गुरु नानक देव जी के मुख से सच्ची बाणी, धुर की बाणी के मीठे बोल जब वातावरण में गुंजायमान होते तो हुजूम के हुजूम गुरु चरणों में आ जुड़ते, मीठे मधुर बोलों के फाहे दुखती रगों पर लगते तो श्रोता किसी अद्वितीय विस्माद शांति सुकून के लोक में पहुंच जाता अनायास मुख से निकलता *'.. धनु नानक तेरी वडी कमाई।'* बड़े ठगों, दुराचारियों, चोर, उच्चकों ने गुरु चरणों पर शीश झुकाया। जन मानस को सत्य मार्ग का प्रकाश देते श्री गुरु नानक देव जी भारत के समूचे भागों में गए। लंका द्वीप, चीन, तिब्बत, मानसरोवर लेह, लद्दाख इधर मक्का, मदीना, बगदाद, ईरान, काबुल, अफग़ानिस्तान सुदूर क्षेत्रों तक २२ वर्ष यात्रा की जिन्हें 'उदासी' कहा जाता है। जनमानस को धर्म के सत्य-स्वरूप का परिचय देते उन्हें निर्मूल पाखंडों, कर्मकांडों से मुक्त होने का मार्ग दिखाते गए। धर्म का सत्य अर्थ क्या है, इसी का उपदेश सब को दिया। श्री गुरु नानक देव जी तो स्वयं चलकर ठगों, चोरों, डेरेदारों और कत्लगाहों पर जाते रहे क्योंकि उन्हें अकाल पुरख के सत्य स्वरूप से लोगों को परिचित कराना था। जीवन का असली अर्थ क्या है में यही समझाया था। अपने-अपने धर्म सिद्धांतों को लेकर एक-दूसरे के विरोधी बने, खून के प्यासे बने, धर्म केंद्रों पर श्री गुरु नानक देव जी पहुंचे। यह श्री गुरु नानक जी के अंदर की आलौकिक रूहानी ताकत थी कि वे बेखौफ़ सज्जन ठग जैसे कातल, भयंकर जादूगर, नर भक्षी कौड़े राक्षस के पास जा पहुंचे, मक्का मदीना बगदाद जैसे कट्टर सांप्रदायिक मजहब जनूनियों के पास जा एक सत्य निराकार अकाल पुरख का नारा बुलंद करते रहे। यह कोई साधारण बात नहीं है। कट्टर पंथियों के डेरों पर जाना उनके ही सिद्धांतों को प्रेम से काटना खुलेआम उनकी टीका-टिप्पणी कर पुन: अपने ही विचारों के मुरीद होने पर उन्हें अपने भावानुकूल बनाना कोई साधारण बात नहीं है। क्रांतिकारी श्री गुरु नानक देव जी के पास ही ऐसी प्रेम आश्रित तर्क शक्ति थी कि कट्टर जुनूनी चरणों पर नत्मस्तक होते गए। समाज के प्रत्येक वर्ग को उन्होंने सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। हिंदू-मुसलमान दोनों को समझाया :

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
छोडीले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥
(पन्ना ४७१)

हिंदू-ब्राह्मण को शुचिता का अर्थ समझाया :

-चउका दे कै सुचा होइ ॥
ऐसा हिंदू वेखहु कोइ ॥ *(पन्ना ९५१)*
-उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥
मतु भिटै वे मतु भिटै ॥
इहु अंनु असाडा फिटै ॥
तनि फिटै फेड़ करेनि ॥
मनि जूठै चुली भरेनि ॥
कहु नानक सचु धिआईऐ ॥
सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ *(पन्ना ४७२)*

आचरण में यदि शुचिता नहीं है तो बाहरी आडंबरों से सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। सच्चा

मुसलमान दिल से सत्य की परख करता है :
दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥
मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ (पन्ना ६६२)

सच्चा जोगी वह है :
सो जोगी जो जुगति पछाणै ॥
गुर परसादी एको जाणै ॥ (पन्ना ६६२)

श्री गुरु नानक देव जी ने अध्यात्म चिंतन का जो मार्ग सुझाया वह समाज चिंतन से जुड़ा मार्ग है। इसलिए सिद्ध-योगियों से चर्चा करते हुए उन्हें समझाया कि समाज में विचरण करो, समूह को साथ लेकर चलो। जिन करामातों के मिथ्या प्रदर्शन से लोक का हित नहीं होता, जनमानस का कल्याण नहीं होता वे जो मात्र बौद्धिक चमत्कार प्रदर्शन के लिए की जाती है, निरर्थक है, चमत्कार करामात दिखाने के नाम पर गुरुदेव जी ने योगियों से कहा :

-गुरु संगति बाणी बिना दूजी ओट नही है राई।. . .
सो दीन नानक सतिगुरु सरणाई ॥(वार १:४२)
-बाबा बोले नाथ जी! सबदु सुनहु सचु मुखहु अलाई।
बाझो सचे नाम दे होरु करामाति असां ते नाही।. . .
सति नामु बिनु बादरि छाई ॥ (वार १:४३)

बाबा जी ने एकमात्र सत्य नाम के साथ जुड़कर शबद गुरु में सुरति को लीन कर एक अच्छे नागरिक बन स्वस्थ समाज के निर्माण का चिंतन दिया। *"सबदि जिती सिधि मंडली कीतोसु अपणा पंथु निराला।"* शब्द ब्रह्म की सर्वोपरिता स्थापित कर सिद्धों को अपना कायल बनाया। संगत से जुड़ने का यही उपदेश श्री गुरु नानक देव जी ने जीवन के अंतिम वर्षों सन् १५२१ से १५३९ परम ज्योति में विलीन होने तक रावी नदी के किनारे श्री करतारपुर में निवास कर अपने सिद्धांतों को संगठन कर दिया। श्री करतारपुर लगभग १८ वर्ष टिक कर *'सबदु कमाईऐ खाईऐ सारु ॥'* शबद की कमाई कैसे करनी है, आदर्श गुरुमुख कैसे बनना है गुरुमुख को कैसे 'नाम दान इसनान' से जुड़ना है इसका व्यवहारिक प्रशिक्षण निकट जुड़े जिज्ञासुओं को देते रहे। जिस निराले सत्य धर्म, सत्य राज्य, निर्मल पंथ की गुरुदेव जी ने स्थापना की थी उसका उत्तराधिकारी भाई लहिणा जी को अंगद रूप में स्थापित कर *'सहि टिका दितोसु जीवदै ॥"* अपने जीवन काल में ही संस्थागत रूप दिया। इस राज्य के मूल सिद्धांत भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी के शब्दों में :

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥
लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥
मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ (पन्ना ९६६)

नानक पंथ सत्य की नींव पर टिकाया गया, भाई लहिणा जी को राज्य सौंपा गया, जिसमें वाहिगुरु की सिफ्तो-सलाह का अमृतपान किया जाए, आत्मत्व का विचार हो, ज्ञान खड़ग पकड़ आत्मबल हासिल किया जाए, गुरु चेला शबद और सुरति की साधना से नानक पंथ चढ़दी कला में विचरण करे। लंगर, पंगत शब्द को प्रसार के साथ-साथ सांझेदारी का प्रतीक लंगर चले और ऐसा ही ज्ञान का चिराग जनमानस को गुरदेव जी ने प्रदान किया।

"बलिओ चिरागु अंध्यार महि सभ कलि उधरी इक नाम धरम ॥" नाम के सहारे एक अकाल पुरख का नाम-सिमरन कर कुल जनमानस सुख, शांति और सदैव आनंद में विचरण करे। यही 'परम गुरु' 'गुर पारब्रह्म' 'परमेश्वर' का संदेश था।

श्री गुरु नानक देव जी की जन्म साखियों में वर्णित अल्प-ज्ञात प्रेरक-प्रसंग

-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'

महापुरुषों का जीवन सामान्य मनुष्यों के लिए सदैव प्रेरणादायक और मार्गदर्शक होता है। उनके जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग घटित होते हैं जो जीवन के गहरे अर्थों को उद्घाटित करके, उसे जीने की सही दिशा प्रदान कर जाते हैं।

महान् आध्यात्मिक चिंतक समाज-सुधारक, नव धर्म प्रणेता प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-पंथ भी ऐसे अनगिनत प्रसंगों से ओत-प्रोत है जो मानव-मात्र को सहज जीवन-युक्तियां सिखाते हैं।

व्यापार के लिए मिले बीस रुपयों से साधु-संतों को भोजन करा देने वाला सच्चा-सौदा प्रसंग, भाई लालो की परिश्रम से कमाई सूखी रोटी का स्वीकार तथा मलिक भागो के शोषण से बनायें पकवानों का तिरस्कार, लोभी दुनी चंद को परलोक ले जाने के सुई देने के बहाने संतोष का सबक और मक्का में ईश्वर किस दिशा में नहीं है की स्थापना करने जैसे अनेक प्रसंग तो गुरु जी के विषय में प्रसिद्ध हैं ही परंतु जन्म साखियों में कुछ ऐसे अल्प-ज्ञात प्रसंग भी दर्ज हैं जो गुरु जी के जीवन को मानवता के प्रकाश-स्तंभ के रूप में स्थापित करते हैं।

१) सच्चे मन से स्मरण : श्री गुरु नानक देव जी सुलतानपुर लोधी में नवाब दौलत खां के मोदीखाने के संचालक थे। नवाब को पता चला कि गुरु जी कहते हैं- 'न को हिंदू न मुसलमान'। नवाब ने गुरु जी को बुलाकर इस बाबत पूछताछ की तो गुरु जी बोले, 'सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं।' नवाब ने कहा ऐसा है तो चलो! हमारे साथ नमाज़ पढ़ो। गुरु जी साथ चले गये परंतु पंक्ति से अलग खड़े होकर नवाब और काज़ी को नमाज़ पढ़ते देखते रहे। नमाज़ के बाद नवाब ने नाराज़गी से पूछा कि आपने नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी? तो गुरु जी ने कहा कि मैं किसके साथ नमाज़ पढ़ता. . . आप का ध्यान तो काबुल में घोड़े खरीदने-बेचने में था। सच्चे मन से स्मरण किए बिना कोई इबादत स्वीकार नहीं होती। नवाब निरुत्तर हो गया।

२) आत्मिक शुद्धि अनिवार्य : अपनी यात्राओं के दौरान एक बार गुरु जी प्रयाग में त्रिवेणी के निकट विराजमान थे। वहां बहुत-सी जनता दर्शन हेतु आ पहुंची। संगत ने गुरु जी से प्रश्न किया कि हम पूजा-पाठ तो बहुत करते हैं परंतु न तो उसका असर होता है और न उसमें रस ही आता है। गुरु जी ने समझाया-- काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार का त्याग करोगे तभी वास्तविक आनंद प्राप्त होगा।

३) राज में त्याग का उपदेश : बनारस के निकट स्थित नगर चंदरौली का राजा हरिनाथ गुरु जी से प्रभावित होकर राज्य त्याग कर सन्यास लेने के लिए प्रस्तुत हुआ तो गुरु जी ने उपदेश दिया कि प्रजा की सेवा करो, राज में ही योग के फल की प्राप्ति होगी।

४) बांट कर खाओ : गुरु जी का कथन है कि बांट कर खाओ। रामेश्वरम के निकट कुछ

(शेष पृष्ठ २३ पर)

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

Final

एक बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मरदाना।

-डॉ प्रेम मच्छाल*

-मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सौ भाई सो मेरा बीर ॥ *(पन्ना ८६१)*

-सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ *(पन्ना ५५८)*

भाई मरदाना जी एक कीर्तनकार थे जिनको गुरु जी कितना मान-सम्मान देकर कृतार्थ करते थे। इन उपमाओं के सामने अन्य पदार्थ या वस्तुएं और सांसारिक प्रलोभनों का कोई औचित्य नहीं रह जाता।

शब्दों का स्वाभाविक अर्थ **'मंत्र'** का कारण है और स्वरों का स्वाभाविक अर्थ राग का कारण है। जब प्रभु नाम-सिमरन अभ्यास होता है तो मोक्ष मार्ग सरल एवं सशक्त बनता है। शायद इसलिए भारतीय संगीत की तीनों विधाओं गायन, वादन, नृत्य में गायन को प्राथमिकता प्रदान की परंतु सिक्ख धर्म में प्रचलित संगीत धारा या प्रवाह जिसे गुरमति संगीत के नाम से संबोधित किया जाता है, में गायन वादन को ही प्रमुखता दी गई है।

गुरमति संगीत या कीर्तन व्यवस्था या भलो-भलो कीरतनीयां का समाज बहुत थोड़े समय में भारतीय संगीत से नव रूप-रंग, आकार और प्रकार लेकर अपने अस्तित्व की परिपक्वता को सुदृढ़ करने में या यूं कहिए कि वैदिक युग से लेकर अब तक जो संगीत उपासक कार्यरत रहे या प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दिया, की संख्या गुरमति संगीत में श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई मरदाना जी के पदार्पण के पश्चात् जितने भी कलाकार या कीर्तनकार इस व्यवस्था से सम्बंधित हुए उनकी सूची कहीं अधिक है। यह ठीक है कि गुरमति संगीत ने जब अपना अस्तित्व स्थापित करने की चेष्ठा की तब उसका न तो कोई भरत रूपी शास्त्रकार था, न नाट्यशास्त्र जैसा शास्त्र था और न ही ख्याति प्राप्त स्वाति नारद भाई तुंबरू जैसा साधक ही था। जैसा भाई गुरदास जी ने लिखा है :

इकु बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मरदाना। *(वार १:३५)*

बस ये दोनों ही एक व्यवस्थापक संस्थापक तथा दूसरा उपासक इन्होंने ही अपने-अपने हुनर और शास्त्रीय संगीत से मिले गुणाधार पर एक नव कला, विधा और गायन शैली को उदय करने का मन बना लिया और भाई फिरंदा जी के पास से पुरातन रबाब को अपनी इच्छा अनुसार तैयार करवाकर उसकी ध्वनि और बनावट में कुछ बदलाव करके नव उदय होने वाले गुरमति संगीत के वादन हेतु या संचालन हेतु इस वाद्य को अपने साथ लिया तथा भाई मरदाना को इस कार्य तथा गुरमति संगीत के प्रारंभिक स्वरूप को सिक्ख धर्म के धार्मिक अनुष्ठान प्रात: से सायं तक क्रियान्वयन हेतु यह सुनिश्चित कार्य के लिए भाई मरदाना ही एक उपयुक्त व्यक्ति है जो इस महान् कार्य को व्यवस्थित रूप देने तथा समाज में प्रतिष्ठा प्रदत्त कराने में अपना पूर्ण सहयोग और कर्त्तव्य निष्ठा से कार्य को कुशलता से करने की सक्षमता ही नहीं रखते बल्कि अन्य संगीत विधाओं के समान ही गुरमति संगीत में निर्धारित किए जाने वाली गायन शैलियों की

**अस्सिटैंट प्रोफेसर, संगीत एवं नृत्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, मो +९१९७२९५-६०००१*

Final

प्रगति और उनकी विकास गति को समृद्धशाली बनाने में पूर्ण सहयोग दे सकते हैं, को सफ़र का साथी, उदासियों का सच्चा मित्र बनाकर साथ रखा। जहां भी गुरु जी का भाई मरदाना जी ने सच्चे साथी की भांति साथ दिया। इतिहासकार कहते हैं कि भाई मरदाना जी को भूख अधिक सताया करती थी। इसलिए कभी-कभी श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई मरदाना जी में प्रेमपूर्वक वार्तालाप भी हो जाया करती। अन्यथा भाई मरदाना जी सच्चा सेवक, मित्र, संगीतज्ञ एवं रास्ते का पंथी बनकर साथ देता रहता। ४७ वर्षों तक यह मिलन यूं ही दिन-प्रतिदिन प्रगाढ़ होता चला गया; कभी-कभार गुरु जी कहकर भी भाई मरदाना से रबाब सुन लिया करते थे। गुरु जी कहते, 'मरदानियां रबाब बजा काई दिदार यार दा करिए' या फिर 'मरदानिया रबाब बजा- बाणी आई ए!' आदि विनम्र भाव से कहकर उसकी रबाब के मिठास भरे स्वरों, धुन को, तथा राग रूपी स्वर लहरों को श्रवण कर धुर की बाणी का उच्चारण करने लगते, दोनों ध्यान मग्न हो जाते और कई-कई घंटे, दिन इसी अवस्था में व्यतीत हो जाते। आत्मिक आनंद की अनुभूति से जहां बाबा नानक अकाल पुरख में लीन हो जाते वहीं भाई मरदाना जी प्यार-सत्कार और उत्पन्न वातावरण से प्रसन्नचित होकर बिना थके रुके निरंतर रबाब बजाते रहते न गुरु जी ही विश्राम के लिए सोचते और न ही भाई मरदाना जी कभी रबाब के स्वरों में ठहराव का अवसर आने देते। इस प्रकार दोनों के उदासियों में भ्रमण के समय किए प्रयासों से प्राप्त अनुभव तथा अन्य धर्माचार्यों से हुईं संगोष्ठियों वादविवाद, विचार-विमर्श से प्राप्ति धर्म संगीत और आध्यात्मिक परकाष्ठाओं को यथा स्थान पिरोकर जब उन्हीं का पुन: अभ्यास किया, गायन-वादन तथा उच्चारण पद्धति के माध्यम से एक नई शैली और एक नया संगीत, जिसमें गायन-वादन तो था किंतु नृत्य नहीं, जहां चार पदार्थों का फल तो था किंतु लोभ-लालच, अहं, कामना, क्रोध का स्थान नहीं, *"राजु ना चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥"* का आदर्शमय विचार था। जहां सात स्वर सप्त ऋषि रूप में दर्शन देकर संसार से मानव मात्र के तप्त हृदयों को सरस प्रदान कर तन-मन को शीत कर रहे थे। जहां सप्त स्वरों के आगोश में बैठे आनंदित होकर जब समाधि लगी फिर *'दिनराती आराधों प्यारों'* की अवस्था प्रकट हो उठी। जहां बाणी-संगीत की स्वर तथा महापुरुषों और संगीत साधक की संगति प्राप्त हो गई वहां फिर तन-मन होत निहाल वाली अवस्था प्राप्त हो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है जब भाई मरदाना जी ने रबाब बजाई, श्री गुरु नानक देव जी ने बाणी गायी तो दोनों के इस महान कला प्रदर्शन से जो रस उत्पन्न हुआ उसको गुरु जी स्वयं वहीं बल्कि संसार को प्रसाद रूप में बांटना चाहते थे। इसलिए आप ने इस महान धारा का नाम पहले तो कीर्तन रखा और बाद में गुरमति संगीत या सिक्ख संगीत का नामकरण कर शास्त्रीय संगीत के परिपेक्ष्य में इसे समृद्धशाली बनाने, जन-जन के रसास्वादन का साधन बनाने तथा मोक्ष मार्ग को प्रशस्त कहने हेतु ही इसके प्रचार-प्रसार करने का दृढ़ संकल्प किया जो आज हमारे सामने गुरमति संगीत के नाम से कीर्तन के माध्यम से समस्त सिक्ख जगत ही नहीं बल्कि उन सभी श्रोताओं, धर्मविलंभी मनुष्यों का उद्धार कर रहा है जो इसका अनुकरण, अनुसरण कर उपासक, आचक, आराधक और अनुयायी बनते चले गये। अनुयायिओं ने व्यवस्था को दृढ़ विश्वास और सुचारू ढंग से प्रचारित और प्रसारित करने हेतु स्वत: का जीवन ही न्यौछावर कर दिया, *"कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥"* कहकर जीवन गायन का साधन बना लिया।

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी : मानवीय चेतना के रूप में

-डॉ. परमजीत कौर*

संसार में मनुष्य का निवास रैन-बसेरे जैसे है परंतु मनुष्य अपने जीवन की नश्वरता को भुलाकर उन कार्यों में उलझा रहता है जो उसके आत्मिक जीवन के मार्ग में बाधा बन जाते हैं। वह सारा जीवन स्त्री, पुत्र, रिश्तेदारों के मोह तथा विषयों के रस में लिप्त होकर बिता देता है। वह यह भूल जाता है कि हकूमत, ज़मीन-जायदाद, यौवन, सुंदरता, इज्ज़त, सम्मान तथा वे पदार्थ जिन पर गर्व करता हुआ सारा जीवन व्यर्थ गंवा रहा है, उसके आत्मिक जीवन के लिए कल्याणकारी नहीं हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी मनुष्य को सुचेत करती है, उसके मन को झकझोरती है तथा सच के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब माया-मोह में लिप्त हुए जीव को समझाते हैं कि हे भाई! परमात्मा की भक्ति के बिना मानव जीवन का समय व्यर्थ व्यतीत होता जा रहा है। हे मूर्ख! दिन-रात पुराण आदि धर्म-पुस्तकों की कथा-कहानियां सुनकर भी तूं नहीं समझता कि यहां सदैव बैठे नहीं रहना, मौत का समय तो समीप आ गया है, तूं भागकर कहां जायेगा :

बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥
निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥
कालु तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥१॥रहाउ॥
असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥
किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥१॥
(पन्ना १३५२)

जैसे फूटे हुए घड़े से पानी धीरे-धीरे निकलता रहता है वैसे ही एक-एक क्षण करके मनुष्य की आयु व्यतीत होती जा रही है :

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥ (पन्ना ७२६)

त्याग और वैराग्य प्रधान होने के कारण गुरु जी की बाणी का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को जीवन तथा संसार की वास्तविक्ता का आभास करवाते हुए माया के बंधनों में रहते हुए भी निर्लिप्त रहकर आत्मिक जीवन की ओर प्रेरित करना है। जो सत्य है उसको जानकर, समझकर अज्ञानता के अंधकार में से निकलकर ज्ञान के प्रकाश भरपूर जीवन-मार्ग पर चलने के लिए मानव-मन को जागृत करने का यत्न करते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब बार-बार समझाते हैं कि मानव शरीर नश्वर है। मनुष्य के जन्म के साथ ही उसकी मृत्यु उसके साथ जुड़ जाती है अर्थात् जिस क्षण जन्म होता है, यह निश्चित हो जाता है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु अवश्य आनी है। जन्म के समान मौत को भी सत्य स्वीकार कर लेने से मृत्यु का भय नहीं रहता। गुरु जी का कथन है :

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥

*६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); फोन : +९१९८१२३-५८१८६

Final

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥
(पन्ना १४२९)

माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-स्त्री आदि रिश्तेदार जिनके साथ जीव सारी उम्र प्रेम करता है तथा जिनके मोह में फंसकर कुमार्ग पर चल पड़ता है। सारे जीवित रहने पर ही साथ देते हैं। जब प्राण शरीर से निकल जाते हैं तो कोई आधी घड़ी भी घर में नहीं रखता तुरंत बाहर निकालने की तैयारी आरंभ कर दी जाती है :

सभ किछु जीवत को बिवहार ॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥
तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥
(पन्ना ५३६)

संसार की प्रीति झूठी है। सारे अपने सुख के लिए ही साथ जुड़े रहते हैं। अंतिम समय कोई साथ नहीं देता किंतु मूर्ख मन समझता नहीं :

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ ॥
मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥
अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥१॥
मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥ *(पन्ना ५३६)*

यहां तक कि मनुष्य का अपना शरीर भी साथ नहीं जाता, जिस पर वह झूठा गर्व करता है तथा उसके संवरने-सजने में लगा रहता है। गुरु जी सुचेत कर रहे हैं :

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥ *(पन्ना ७२६)*

धन, जायदाद, घर सब कुछ यहां ही रह जाता है, इनमें से कोई भी वस्तु मृत्यु के समय जीव के साथ नहीं जाती :

धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥
तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥
(पन्ना १२३१)

यह संसार उस धन के समान है जो स्वप्न में मिल जाता है परंतु जब नींद खुलती है तो समाप्त हो जाता है :

इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥
संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥
(पन्ना ११८६)

गुरु साहिब दूसरा दृष्टांत देकर समझा रहे हैं कि यह जगत रचना मृगतृष्णा के समान है जैसे प्यासा हिरण रेत को पानी समझकर उसके पीछे दौड़ता रहता है वैसे ही मनुष्य मायिक पदार्थों के सुख को वास्तविक सुख समझकर उनके पीछे दौड़ता हुआ जीवन-मार्ग से भटक जाता है :

म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥ *(पन्ना ५३६)*

मानव-जन्म में परमात्मा का नाम ही वास्तविक खज़ाना है जो मनुष्य के साथ जाता है अर्थात् नाम जपने से, परमात्मा के साथ जुड़ने से आचरण अच्छा हो जाता है, मंदकर्मों का त्याग कर दिया जाता है। मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त करता है। उसे अपने कर्मों का लेखा स्वयं ही देना पड़ता है। अन्य कोई खज़ाना इस तरह की सहायता नहीं

कर सकता, चाहे लाखों, करोड़ों की जायदाद हो अनेक सगे-सम्बंधी हों, कोई सहायक नहीं बनता। जैसे रेत की दीवार चार दिन भी नहीं टिकती वैसे ही माया के सुख भी क्षणिक होते हैं। इन सुखों में लिप्त होकर अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहे जीव को गुरु जी सचेत कर रहे हैं परमात्मा के प्रेम में रहकर उसके नाम का सिमरन किया कर। अभी भी समझ जा, जाग जा, अभी भी तेरा कुछ बिगड़ा नहीं, शेष आयु अच्छे कर्म करके व्यतीत कर :

रे नर इह साची जीअ धारि ॥
सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥
बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥
तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥१॥
अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥
कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥ *(पन्ना ६३३)*

गुरु जी के उपदेश को न सुनकर लोभ के अधीन अधिकाधिक धन की आशा में जगह-जगह भटकने वाले जन-जन की खुशामद करने वाले जीव की दशा का वर्णन करते हुए गुरु साहिब कहते हैं कि ऐसे जीव सुख की जगह दुख ही भोगते हैं; प्रत्येक दर पर भटकते फिरते हैं; परमात्मा का सिमरन करने की सुधि ही नहीं है। लोगों द्वारा किए गए उपहास पर भी लज्जित नहीं होते :

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ ॥
सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥
मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥
नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥ *(पन्ना ४११)*

सब कुछ जानते-समझते हुए भी कुमति के प्रभाव के अधीन अपना काम स्वयं ही बिगाड़ने वाले जीव को गुरु जी ताड़ना कर रहे हैं कि तूं गुरु के उपदेश को ध्यान से सुन तथा प्रभु की शरण में आकर नाम जप :

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥
जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥ *(पन्ना ७२७)*

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि के वश में हुआ मनुष्य परमात्मा का सामीप्य प्राप्त नहीं कर सकता। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अनुसार काम, क्रोध आदि बुरे मनुष्य की संगति जैसे हानिकारक है। इन्हें छोड़ने का प्रयत्न करना चाहिए :

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥ *(पन्ना २१९)*

साधसंगत में आकर नाम-सिमरन करता हुआ मनुष्य मन को काम, क्रोध, अहंकार आदि विकारों के प्रभाव से मुक्त कर सकता है :

जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥
तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥ *(पन्ना ६३३)*

मानव जीवन को सफल करने तथा

नाम-सिमरन के मार्ग पर चलने का तरीका बताते हुए गुरु साहिब समझाते हैं कि रसना से प्रभु के गुण गाओ तथा कानों से सुनो :

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥
(पन्ना ६३१)

परमात्मा के नाम का सिमरन करने से अकाल पुरख के साथ सांझ बन जाती है, माया एकत्र करने की लालसा समाप्त हो जाती है। लोभ, मोह आदि मन को भटकाते नहीं; आत्मिक स्थिरता बन जाती है :

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥रहाउ॥
माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥
लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥ (पन्ना ११८६)

अकाल पुरख के नाम-सिमरन के बिना अन्य किसी भी तरीके से माया के बंधनों से मुक्ति नहीं मिलती। कलयुग में नाम-सिमरन से ही उद्धार हो सकता है :

कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥
अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥ (पन्ना ६३२)

गुरु साहिब दृष्टांत द्वारा समझा रहे हैं कि हे भाई! परमात्मा के नाम का आश्रय ले। यह नाम सारे दुखों को नष्ट करने वाला है। इस नाम का सिमरन करते हुए अजामल ने विकारों का त्याग कर दिया, गणिका विकारों से मुक्त हो गयी। जब गज (हाथी) ने परमात्मा का नाम लिया तो उसकी विपत्ति दूर हो गई, वह तेंदुए की जकड़ से मुक्त हो गया, ध्रुव सदा के लिए अमर हो गया :

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥
अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥१॥ रहाउ ॥
गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥
नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥१॥
अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥
नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥२॥ (पन्ना ८३०)

परमात्मा मनुष्य के अपने शरीर के अंदर ही हृदय घर में स्थित है। अज्ञानतावश प्रभु को बाहर जंगल आदि में ढूंढना छोड़कर सारे भ्रमों को त्यागकर प्रभु को हमेशा याद करना चाहिए। यही वह रास्ता है जो प्रभु तक पहुंचाता है। इसलिए गुरु साहिब बार-बार ताकीद कर रहे हैं :

-रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥
जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ ॥ (पन्ना १३५२)

-सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥
अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥
(पन्ना १३५२)

हमें उठते, बैठते, सोते, जागते सदैव श्री गुरु तेग बहादर साहिब की यह शिक्षा याद रखनी चाहिए :

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥
(पन्ना १४२७)

कविता

चांदनी चौक दिल्ली : शहादतों की अनूठी दास्तान

*-स. निरवैर सिंघ अरशी**

औरंगज़ेब के जुल्मों से जब, मच गई देश में हाल-दुहाई।
कश्मीरी पंडितों की टोली, ले फ़रियाद अनंदपुर आई।
रो-रो के सब हाल सुनाया, हो रही जैसे धर्म की हानी।
मार दिया जाता है उसको, करता है जो नाफ़रमानी।
नौवें सतिगुरु श्री गुरु तेग बहादर जी, दुखियारों को दिया दिलासा।
श्री गुरु नानक देव जी के घर से कोई नहीं गया निराशा।
कैसे सुलझे जटिल समस्या, अंतर-ध्यान हुए सतिगुरु जी।
दिल्ली खुद ही जाना होगा, निर्णय पर पहुंचे सतिगुरु जी।
मुश्किल कहें डगर पनघट की, यह तो मरघट भी है प्यारे।
भाई और पिता जिस पापी, राज-हवस की खातिर मारे।
सतिगुरु को मालूम है वापिस, शायद ही आना हो पाएगा।
धर्म की नैया पार लगते, लाज़िम था कि सिर जाएगा।
पूज्य माता, प्यारी पत्नी, गोबिंद राय जिगर के टुकड़े।
नगर निवासी एक बार तो, सुनकर रह गए उखड़े-उखड़े।
बेशक प्राण जाए तो जाए, कीया वचन हरगिज़ न जाए।
घर-परिवार से तोड़ के नाता, दिल्ली ओर थे कदम बढ़ाए।
लेकिन अकल की अंधी दिल्ली, अकल की बातें कब सुनती है ?
वोह तो कहर की चक्की में, जो भी आया दलती, धुनती है।
मती दास, सती दास, दिआला जी, साथ में थे जो सिक्ख प्यारे।
बहुत डराया और धमकाया, लालच भी दिए गए भारे।
सुंदर हूरें, हीरे-मोती, सिक्खों को भरमा न सके थे।
मौत के भय भी इन सिंघों को, अपना दीन मना न सके थे।
हार गए जब ईन मनाते, काजी और मौलाने-मुफ्ती।
शाह ने कहा कि मारो इनको, ढूंढ के कोई अच्छी जुगती।
काज़ी ने फिर लाल किताब के, सोच-सोच पन्ने पलटाए।
अति-दुखदायक कड़ी सज़ा के, भिन्न-भिन्न गए हुक्म सुनाए।
आकर देखो काफ़िर मरते, नगर में डोंडी गई पिटाई।
शाही हुक्म था चौक चांदनी, खलकत हुम-हुमा के आई।

**C/o* अरशी गिफ्त सेंटर, नवीं आबादी, श्री अनंदपुर साहिब-१४०११८, मो. +९११८८८६-३६४१३

Final

कहा गया कि अब भी समय है, गुर इसलाम कबूलो।
दुनिया भर के मन-बांछत फल, पा सकते हो सिक्खों।
लेकिब सब ने यही कहा, 'हम मरते मर जाएंगे।
गुरु की सिक्खी त्याग के जीना, हरगिज़ न चाहेंगे।'
शुरू हुआ फिर जुल्म का तांडव, औरंगे जो खेला।
कैसे थे वो सिक्ख हठीले, सब हंसते-हंसते झेला।
खौलते पानी की देग में, भाई दिआला गया बैठाया।
भड़ते जैसा जिस्म हो गया, माथे शिकन न आया।
भाई सती दास जी प्यारे, रूई में फिर गए लपेटे।
आग लगी जब रूई को, उस भाई जी के जिस्म समेटे।
धर्म की खातिर जान दे रहे, इधर हिन्द बाग के माली।
अंधेर-नगरी और चौपट राजा, खूब दे रहे मूर्ख ताली।
जकड़ दिया फिर दो पटड़ों में, मती दास गुरु का प्यारा।
दो जल्लाद भी हाज़र हो गए, लेकर भरकम तीखा आरा।
अंतिम-ख़्वाहिश का काज़ी ने, जब था आकर ज़िक्र चलाया।
दोनों हाथ जोड़कर सिक्ख ने, काज़ी से था यूं फरमाया।
'चले सीस पर आरा जब तो इतना कर्म ज़रूर कमाना।
मेरा मुंह साचे सतिगुरु के पावन पिंजरे तरफ घुमाना।'
खोपर के मध्य चीर लगाकर, चलने लगा जो तीखा आरा।
भाई जी भी जाप आरंभा, जपु जी साहिब का प्यारा।
सच है 'जिनी नामु धिआइआ', घाल उन्हों की एही।
'केती छुटी नालि' कहा तो, छुटी मानुष देही।
चौक चांदनी में ही हुई, फिर नौवें सतिगुरु की कुर्बानी।
धर्म-धुजा फहिराने खातिर, वार गए पावन ज़िंदगानी।
सिरजे गए इतिहास नए, कुल जग में छिड़े यह चर्चे।
चौक चांदनी में तो सचमुच, पड़े थे आश्चर्ज पर्चे।
कोई उबला, कोई जला, किसी तन दो-फाड़ कराया।
सतिगुरु तेग बहादर, 'धर्म की चादर' भी कहलाया।
गैर-धर्म की खातिर सतिगुरु, वारी जो ज़िंदगानी।
'जय जय जय सुरलोक' हुई, और घर-घर छिड़ी कहानी।
सर पर कफ़न बांधकर खुद, कातिल के घर तक जाना।
'अरशी सच-मुच है लासानी, अजब-गज़ब अफ़साना।
धन्य-धन्य श्री गुरु तेग बहादर साहिब, आओ सब मिल गाएं।
सतिगुरु जी के चरणों पर, हम श्रद्धा-सुमन चढ़ाएं।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में 'मन'

*-स. सुखदेव सिंघ शांत**

मन क्या है? मन की अवस्था क्या है और मन को किस ढंग से साधना है? इस पर काबू कैसे पाना है? इन प्रश्नों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बड़े विस्तार से विचारा गया है। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में विशेष रूप से मन एक केंद्रीय नुक्ता है। आप जी की बाणी ज्यादातर मन को सीधे तौर पर संबोधित है। आप जी की बाणी में मन के साथ सीधी बातचीत की गयी है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में मन को संबोधन इतना प्रभावशाली है कि हर बात सीधा मन को जाकर स्पर्श करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंत में दर्ज नवम् गुरु जी के उच्चारण किए गये सलोक मानवीय मन को अपनी ओर आकर्षित करने में बहुत ही समर्थ हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ के भोग के समय इन सलोकों के पाठ के वक्त आम तौर पर सारी संगत इकट्ठा हो चुकी होती है। यह बाणी प्रत्येक श्री अखंड पाठ साहिब या सहिज पाठ के भोग के समय सबसे ज्यादा सुनी जाती है। सलोकों में बीस सलोक ऐसे हैं जिनमें मन को सीधा संबोधन है।

सामूहिक रूप से आप जी की बाणी में निम्नलिखित पद-सलोक इस संबंधी देखने योग्य हैं :

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥
(पन्ना ७२७)

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥
पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥ *(पन्ना ६३१)*

मन रे साचा गहो बिचारा ॥
राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥
(पन्ना ७०३)

मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥
कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥ *(पन्ना ६३३)*

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
(पन्ना ७२६)

कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥ *(पन्ना १४२६)*

कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥
(पन्ना १४२६)

इनके बिना भी गुरु जी ने 'मन' शब्द का अपनी बाणी में ज्यादातर प्रयोग किया है। मानवीय मन की तसवीर का चित्रण आप जी की बाणी में बड़े ही तीक्ष्ण प्रभाव वाला है। राग देवगंधारी में आप मन की अवस्था का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं :

यह मनु नैक न कहिओ करै ॥
सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ ॥
मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥
करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥

**३६बी, रत्न नगर, पटियाला- १४७००१*

Final

कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥ *(पन्ना ५३६)*

'मन' माया के नशे में पागल हो चुका है। कई प्रकार के फरेब करके दुनिया को लूटता है, ठगता है तथा अपने तन का पेट भरता है; कुत्ते की पूंछ की तरह सीधा नहीं होता और न ही कहना मानकर दुरमति से पीछे हटता है। आखिर में गुरु साहिब मन को समझाते हैं कि परमात्मा की बंदगी की जानी चाहिए, जिससे मनुष्य सफल हो सकता है, उसके कार्य सफल हो सकते हैं।

इसी तरह गुरु जी ने राग आसा में मन की अवस्था का ज़िक्र करते हुए बताया है कि मन लोभ के अधीन सभी दिशाओं की ओर दौड़ता है, माया की खातिर यह दर-दर भटकता है तथा हर एक की जी-हजूरी करता है। माया की खातिर मन इतना गिर जाता है कि इसको लोक-लज्जा की भी परवाह नहीं रहती। सुख की प्राप्ति के लिए यह कई तरह के दुखों को दावत देता है। ऐसी अवस्था में हरि के नाम का इसको कोई ध्यान नहीं रहता।

मन की भटकना का कारण है-- इसकी चंचल तृष्णा। संसार के सब दुखों का कारण हमारे मन की तृष्णाएं हैं। मनुष्य की इच्छाओं की कोई हद नहीं तथा ये बढ़ती जाती हैं, किंतु इनकी पूर्ति के साधन सीमित हैं। सीमित साधन होने के कारण जब इच्छाएं पूरी नहीं होती तो मनुष्य की ज़िंदगी में संतुष्टि नहीं होती। संतुष्टि न होना एक दुख है। इस दुख में मानवीय मन इधर-उधर भटकता है। इसको टिकाव या एकाग्रता नसीब नहीं होती। गुरु जी मन की इस भटकने वाली स्थिति को बयान करते हुए फरमान करते हैं :

साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥
चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥ *(पन्ना २१९)*

मन इस दिखते संसार को अपना समझता है। उसको यह याद ही नहीं रहता कि जिस तन में वह बसा है वह भी सदैव रहने वाला नहीं। माता-पिता, बहन-भाई, पत्नी, औलाद आदि उसका (परलोक में) साथ देने वाले नहीं हैं। हर कोई अपने सुख की खातिर मोह करता है। दुख के समय या मृत्यु के समय कोई किसी का नहीं बनता। इस कटु सच्चाई को सुनना तथा इसको हज़म करना मन के लिए बहुत कठिन है। जवानी तथा माया के नशे में चूर मन यह समझता ही नहीं है कि यह संसार सपना, मिथ्या, मृग तृष्णा, पानी का बुदबुदा, धुएं का पहाड़ या बादल की छांव जैसा है। मन पर-धन तथा पर-स्त्री के पीछे लगकर और भी गहरी खाई में जा गिरता है। मन की इस गिरावट को गुरु जी की बाणी में जगह-जगह दर्शाया गया है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब अजामल, गनिका तथा गंधर्व की मिसालें देकर मानवीय मन को हौसला भी देते हैं। आप मन को निराशा की खाई में गहराई में जाने से बचाने का प्रयास बताते हैं। 'उपाय' आप जी की बाणी में केवल और केवल हरि का नाम है। अगर अजामल, गनिका तथा गंधर्व जैसे लोगों के मन हरि के नाम का सदका इस भवसागर से पार लग सकते हैं तो मनुष्य के लिए तो आशा हर समय मौजूद है। इस आशावादी दृष्टिकोण से ही आप मन को समझाते हैं :

अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥ *(पन्ना ६३३)*
अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥ *(पन्ना ७२६)*

गुरु जी बार-बार मन को मृत्यु की याद दिलाते हैं। आप जी का उद्देश्य मानवीय मन को मृत्यु की याद दिलाकर परमात्मा की भक्ति की ओर लगाना है। मृत्यु को याद करवाकर गुरु जी मन डरा नहीं रहे, वे तो मन को सावधान कर रहे हैं ताकि मन सही रास्ते पर चल पड़े। गुरु जी मन को संयम के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते हैं। वे इस संसार को छोड़कर भागने की शिक्षा नहीं देते। गुरु जी मानवीय मन के लिए त्याग का रास्ता इस प्रकार बताते हैं :

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥ (पन्ना २१९)

गुरु जी मन के मान को त्यागने के लिए कहते हुए काम, क्रोध तथा दुर्जन का साथ छोड़ने के लिए कहते हैं। वे बुराइयों से दूर रहने के लिए कहते हैं न कि संसार से दूर रहने के लिए। संसार से भागना निराशावाद है, भांजवाद है तथा डर जाने वाली स्थिति है। संसार में, परिवार में रहते हुए बुराइयों पर काबू पाना ही गुरु जी की शिक्षा का सार है। आप जी फरमान करते हैं :

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥ (पन्ना ६८४)

मन ने करना क्या है ? मन ने एकाग्रता तथा समदृष्टि की अवस्था को हासिल करना है, टिकाव में आना है, दो बिल्कुल विरोधी बातों को अर्थात् सकारात्मक एवं नकारात्मक को एक समान समझना है। वैरी-मित्र, कंचन-लोह, सुख-दुख, मान-अपमान, हर्ष-शोक तथा स्तुति-निंदा को एक समान समझना है। सच में ही यह एक कठिन मार्ग है। यह इतना कठिन मार्ग है कि परमात्मा की कृपा के बिना मानवीय मन में इस पर चलने की सामर्थ्य नहीं आ सकती। इसीलिए इस रास्ते के पथिक "कोटन मै कोऊ" होते हैं। कोई एकाध गुरमुख ही इस रास्ते पर चल सकता है। गुरु जी फरमान करते हैं :

जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥ (पन्ना २१९)

हां, अगर मन मोह-माया में खचित होने से बचकर अपने आप को हरि के सिमरन की ओर लगा ले व हउमै त्याग दे, तो इस रास्ते पर चला जा सकता है। रास्ता मन के बिल्कुल पास है। अपने भीतर से ही मन ने इसको ढूंढना है। गुरु जी इस रास्ते का वर्णन करते हुए बताते हैं :

बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥ (पन्ना ६८४)

जैसे पुष्प में खुशबू बसती है तथा जैसे शीशे में अक्स दिखता है, वैसे ही परमात्मा का निवास मन के अंदर है। मन ने आपा खोजना है, अपनी असलियत को जानना है। माया-मोह, काम-क्रोध तथा लोभ सब कुछ तो ऊपरी काई या झिल्ली हैं। इस भ्रम की झिल्ली या काई को उतार दिया जाये तो मन का सुंदर स्वरूप अपने आप साकार हो जायेगा। गुरबाणी में मन को "जोति सरूपु" कहा गया है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥ (पन्ना ४४१)

जब मन अपने मूल को पहचान लेगा, अपना आप खोज लेगा, तो उस पर चढ़ी हुई काई, मैल या भ्रम की झिल्ली उतर जायेगी, मन निर्मल हो जयेगा। निर्मल मन "जोति सरूपु" है। "जोति सरूपु" मन सुचेत रूप में तो क्या सपने

में भी पाप करने से दूर रहेगा। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी मन की अवस्था इतनी ऊंची ले जाना चाहते हैं कि वह अचेत पाप से भी बचकर रहे। मन में बुराई या पाप सपने में या ख़्यालों में भी न आये। आप जी फरमान करते हैं :

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ (पन्ना २२०)

जब मन सपने या ख़्यालों में भी बुराई तथा हउमै से दूर हो जायेगा तो वह एकाग्र हो जायेगा, जीता जायेगा। मन जीता गया तो समझो सब कुछ जीता गया। धन, जायदाद, दुनियावी सुख को जीतने से मनुष्य हारता है। मन को जीतने से ही मनुष्य जीतता है। गुरबाणी में फरमान है :

मन जीतै जगु जीतु ॥ (पन्ना ६)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी एकाग्र होकर पढ़ने या सुनने से ऐसे प्रतीत होता है जैसे मन को सीधी एवं प्यार भरी टकोर लगाई जा रही है, जमी हुई विकारों की काई उतारने का प्रयत्न किया जा रहा है। आप जी की बाणी में सचमुच ही मन को अंदर तक छू लेने की सामर्थ्य है। पूर्ण रूप से मन को "जोति सरूपु" बनने के मार्ग पर चलाने में सक्षम है आप जी की रसमयी बाणी। ❂

श्री गुरु नानक देव जी की जन्म साखियों में . . . *(पृष्ठ ११ का शेष)*

योगियों ने इस पर शंका प्रकट की और गुरु जी को एक तिल देकर कहा कि इसे कैसे बांट कर खाया जा सकता है। गुरु जी ने तिल को सिल-बट्टे पर पीस कर पानी में मिलाकर सभी को बांट दिया। यह देखकर योगियों ने भक्ति-भाव से गुरु जी को प्रणाम किया।

५) *एक पैसे का सच-एक पैसे का झूठ :* प्रचार यात्राओं के दौरान एक बार गुरु जी सियालकोट नगर में पहुंचे तो भाई मरदाना जी ने गुरु जी से जीवन का सत्य समझाने की प्रार्थना की। गुरु जी ने भाई मरदाना जी को शहर में भाई मूले के पास भेजा और कहा एक पैसे का सच और एक पैसे का झूठ लेकर आओ। भाई मूला ने कागज़ के टुकड़े पर लिख दिया-- 'मरना सच' और 'जीणा झूठ'। गुरु जी ने भाई मरदाना को समझाया- यही है 'जीवन का सत्य'।

६) *गृहस्थ का गौरव :* श्री गुरु नानक देव जी जब पेशावर के निकट गोरख हटड़ी में पहुंचे तो योगियों ने पूछा-- आप उदासी हो या गृहस्थ। गुरु जी ने उत्तर दिया, मैं गृहस्थ हूं। तो योगियों ने कहा कि जैसे नशेड़ी व्यक्ति प्रभु का ध्यान नहीं कर सकता उसी प्रकार माया में फंसा गृहस्थी भी ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। गुरु जी ने उत्तर दिया कि ईश्वर सद्गुणों से प्राप्त होता है। गृहस्थी या सन्यासी, जो सद्गुण धारण करेगा वही ईश्वर को प्राप्त कर सकेगा।

इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के ऐसे अनेक प्रसंग हैं जो मनुष्य जीवन जीने की सही राह दिखाते हैं। ❂

नाम और विगास

*-स. सुरिंदर सिंघ निमाणा**

गुरमति में परमात्मा के प्रति जिज्ञासु के लिए निर्धारित केंद्र बिंदु नाम ही है। नाम परमात्मा का ही साकार रूप है। नाम की प्राप्ति परमात्मा की प्राप्ति है। यह वह अमूल्य निधि है जो उसकी अपार बख़्शिश होने पर और और इसकी तीव्र आशा रखने वाले जिज्ञासु को प्राप्त होती है तथा जिसको प्राप्त करके वह इतना तृप्त तथा आनंदमयी हो जाता है कि अन्य किसी प्राप्ति की पिपासा ही मिट जाती है एवं प्रसन्नता, विगास तथा आत्मिक खुशी का द्वार उसके लिए खुल जाता है।

इस दृष्टमान नश्वर संसार में दुख-कलेश तथा संताप के अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। कोई भी जोनि पाकर, भले ही वह सर्वोपरि स्वीकार की जाती मनुष्य की जोनि ही हो, जीव इस संसार के दुखों-कलेशों तथा संतापों के साथ, कुछ न कुछ तो संबंध अनिवार्य रूप में रखता ही है परंतु यदि उसको नाम-निधि अर्थात् नाम-रूप अमूल्य एवं सदैव पास रहने वाला खज़ाना मिल गया है तो उसको ये दुख प्रभावित नहीं कर सकेंगे। दुख आयेंगे अवश्य परंतु अपना कष्टदायक तथा संताप देने वाला प्रभाव वे जीव के मन पर नहीं डाल सकेंगे। उस मनोस्थिति में तो वे अपितु दारू अथवा उपचार बन जायेंगे सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोगों का। जैसे कि गुरबाणी का फरमान है :

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ *(पन्ना ४६९)*

नाम-भक्ति सहज भक्ति है जो हठ, तप या तपस्या के अत्यंत कठोर मार्ग से कहीं अधिक सुगम है। इसमें अंतर्मुख सिमरन तथा जाप में मन स्थिर हो जाता है। तब वह संसार में अपने ज़िम्मे लगते अति अनिवार्य करते हुए, विशेषत: घर-गृहस्थी के तथा सामाजिक कार्य निभाते हुए पंजाबी लोकोक्ति 'हत्थ कार वल्ल ते चित्त करतार वल्ल' की प्रसिद्ध लोकोक्ति के अनुरूप एक ऐसी प्रक्रिया को जीवन का अभिन्न अंग बना लेता है कि उसको हर प्रकार के, अपने ज़िम्मे लगे कार्यों को निभाने की एक सहज खुशी प्राप्त होती है। उसके आत्मिक विकास की प्रक्रिया निरंतर चलती है। ऐसी ही आत्मिक स्थिति के सम्बंध में वर्णन 'जपु जी साहिब' में आदि गुरु, श्री गुरु नानक देव जी ने किया है :

नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ *(पन्ना २)*

नाम और विगास का अभिन्न सम्बंध अन्य भी कई पक्षों के द्वारा स्पष्ट हो सकता है। नाम-भक्ति किसी निर्मल कथन का जुबान तथा मन-आत्मा द्वारा एक ही समय संयुक्त रूप में किया जाने वाला अभ्यास है। यहां सूफी फकीर साईं बुल्ले शाह के शब्दों में बात समाप्त हो जाती है; यह ऐसा 'अलफ़' है जिसके पढ़ने से मुक्ति का दर खुल जाता है वास्तव में नाम-भक्ति में लीन मन को सिर्फ पढ़ने की गुलामी नहीं भोगनी पड़ती। वह पढ़-पढ़कर गाड़ियां

**मुख्य संचालक, ऐवरग्रीन साइंस एण्ड सपोर्टस स्कूल, अच्चल साहिब, बटाला, मो +९१९८७२७-३५१११*

नहीं लादता अर्थात् भरता। बात तो एक पवित्र पंक्ति अथवा पावन शब्द के मूल भाव के मन में बस जाने की या बसाने की होती है। इसका यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि साहित्य अध्ययन ही न किया जाए बल्कि वास्तविक बात समझ कर पढ़ने और मूल भाव को मन-आत्मा में बसाने की है। बसाकर फिर उसके अनुरूप अमल या व्यवहार में लाना होता है। वास्तव युक्ति यह है कि पाठक अनुभव की मनोस्थिति में अवश्य हो। प्रत्येक पढ़ी-गायी जाने वाली पावन पंक्ति के भाव का एहसास आवश्यक है।

नाम-भक्ति के शांत तथा निर्मल चश्मे के शीतल तथा मीठे जल में हर प्रकार के विकारी तथा निम्न भावों को धो देने की तथा इस तरह मन-आत्मा को स्वच्छ कर देने की अपार क्षमता है। वस्तुत: विकारी भाव ही समस्त बेचैनी का मूल कारण हुआ करते हैं। दिल की रौशनी होते ही जैसे रात का अंधकार अलोप हो जाता है यूं ही सात्विक ज्ञान की मनोस्थिति में मन आत्मा नूरो-नूर हो जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को विकारी भाव स्वीकार किया गया है। माया के तीन गुण रजो, तमो, सतो से भी सावधान किया जाता है। नाम-भक्ति इन सभी से इनमें अच्छी सुरक्षा प्रदान करती है। एक विकार को दूर करने से शेष विकार भी धीरे-धीरे छुटकारा करते जाते हैं। वास्तव में गुणों और अवगुणों दोनों की लंबी श्रृंखलाएं हुआ करती हैं। इस तरह नाम-भक्ति के साथ जुड़ा मनुष्य अवश्य ही एक पड़ाव पर पहुंचकर शुभ गुणों की खान बन जाएगा। उसके सभी अवगुण धीरे-धीरे मिट जाएंगे।

संसार में इस वर्तमान समय में दुखों की मात्रा व दर्जा बहुत बढ़ चुके हैं। इसका मूल कारण मनुष्य का नाम-भक्ति से टूटे होना है न कि कोई और। नाम-भक्ति से वास्तविक रूप में जुड़े लोग बहुत ही कम हैं। उनके चेहरे पर नाम द्वारा प्राप्त नूर चमकता दिखाई देता है। उनके अंदर की शीतलता का एहसास होता है जब उनसे मिलकर उनसे बातचीत करते हैं। इस प्रसंग में नाम में रत्त भक्त जन तो अपने चौगिर्दे तथा संपर्क में आने वाले सभी जनों को अपने विगास की जाग लगाता जाता है। उसके नयनों से अमृत झरता है तथा प्रवचनों से मधु रस। उसके पास जाने वाले लोग उससे अपने दामन में अपने लिए शीतलता तथा मिठास का प्रसादि बांधकर लाते हैं।

नाम-अभ्यास द्वारा ही मनुष्य की स्थूल से सूक्ष्म की तरफ यात्रा आरंभ होती है। दृष्टामान संसार तथा अदृष्ट जगत के बहुत बड़े रहस्य उसके लिए खुल जाते हैं। रचना और बिनसने की प्रक्रिया की छुपी रमज़ें उसको मिल जाती हैं अपने बिनस जाने का ख़्याल उसको सताता नहीं, बल्कि शारीरिक रूप में बिनस जाना उसको मूल स्रोत के साथ एक होना प्रतीत होता है परंतु साथ ही जीवन भी उस मालिक की बख़्शिश की हुई उत्तम वस्तु लगता है, जिसके साथ एक ही समय मोह या निरमोह कुछ भी नहीं होता। यह ऊंचा अवसर है, यह शुद्ध कुंदन होने की बारी है, ऐसे अनुभवों तथा प्रतीतियों में वह ज्ञानवान होने की मनोस्थिति तक पहुंच जाता है।

Final

भक्त नामदेव जी

-स. गुरदीप सिंघ*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब संसार का एकमात्र ऐसा धर्म ग्रंथ है, जिसमें अपने धर्म के संस्थापकों के अतिरिक्त अन्य धर्मों के महानुभावों की बाणी को भी स्थान प्राप्त है। यह कार्य स्वयं सिक्ख गुरु साहिबान ने किया। जिन भक्तों की बाणी को इस महान् ग्रंथ में स्थान प्राप्त है उनमें से भक्त नामदेव जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। परम पुरख परमात्मा के निर्गुण स्वरूप को उजागर करती भक्त नामदेव जी की बाणी के ६१ शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। भक्त नामदेव जी के शबद १८ रागों में संकलित हैं।

भक्त नामदेव जी का जन्म १२०७ ई में सितारा के समीप नरसी बामणी गांव महाराष्ट्र में हुआ और देहांत ८० वर्ष की आयु में पंजाब के घुमाणा गांव में हुआ। भक्त नामदेव जी के पिता का नाम दामशेटी और माता का नाम गोनाबाई था। भक्त नामदेव जी के परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय थी।

भक्त नामदेव जी की कीर्ति सिर्फ महाराष्ट्र में ही नहीं बल्कि समस्त भारत में फैली हुई है। उन्होंने मनुष्य मात्र के कल्याण और समस्त समाज के उद्धार के लिए अपनी बाणी का सृजन किया। उन्होंने जीवों को प्रेमा-भक्ति के ऐसे मार्ग पर प्रशस्त करने का प्रयास किया जो सहज और साधारण था। उनके द्वारा बतलाया मार्ग प्रेम का मार्ग है, जिसमें कर्मकांडों और संकीर्णता को कोई स्थान प्राप्त नहीं, यह संपूर्ण मानवीय कल्याण को ही आदर्श मानता है। इस प्रकार भक्त, प्रचारक, सुधारक और साहित्यकार के रूप में भक्त नामदेव जी को समाज में अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

भक्त नामदेव जी के समय ज़बरदस्ती धर्म परिवर्तन के प्रचलन की बात सामने आती है। भक्त नामदेव जी स्वयं वर्णन करते हैं कि बादशाह (मुहम्मद बिन तुगलक) ने मुझे कहा कि मैं तेरे प्रभु की शक्ति देखना चाहता हूं। यह मरी हुई गाय जीवित कर दे, नहीं तो मैं तुझे मार दूंगा। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। वही होता है जो प्रभु चाहता है। बादशाह ने आदेश दिया कि इस पर हाथी चढ़ा दिया जाए। भक्त नामदेव जी के पांव में बेड़ियां डाल दी गईं किंतु फिर भी वह प्रभु-सिमरन में लीन रहे। प्रभु ने उन्हें इस संकट से बचाया क्योंकि प्रभु भक्त वत्सल है। प्रभु अपने भक्तों के कष्टों का निवारण करते हैं :

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥
देखउ राम तुम्हारे कामा ॥ . . .
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥ . . .
मेरा कीआ कछू न होइ ॥ . . .
बादिसाहु चड़िओ अहंकारि ॥
गज हसती दीनो चमकारि ॥
रुदनु करै नामे की माइ ॥
छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥
न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥
पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥
करै गजिंदु सुंड की चोट ॥
नामा उबरै हरि की ओट ॥ (पन्ना ११६५)

भक्त नामदेव जी रामकली राग में चर्चा

*३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : +९१९८८८१२६६९०

Final

करते हैं कि काशी में उल्टा लटककर तप करने, तीर्थों पर शरीर त्यागने, आग में जलकर मरने, योग अभ्यास करने, अश्वमेव यज्ञ करने, सोना दान करने, स्नान करने, गोमती के किनारे हज़ार गायों का दान करने, हिमालय पर्वत की बर्फ में समाधि लगाकर तप करने, हाथी-घोड़े, स्त्री, ज़मीन का दान करने का कोई लाभ नहीं। यह समस्त कार्य प्रभु-नाम की बराबरी नहीं कर सकते। प्रभु चरणों में चित्त लगाकर यह समझ आती है कि तीर्थ-व्रत आदि व्यर्थ हैं। गुरु द्वारा समझाये मार्ग पर चलकर प्रभु का स्मरण कर जीव शुभ कर्मों वाले और बुद्धिमान हो जाते हैं :

एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जाईं ॥१॥
भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ॥
गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥
(पन्ना ७१८)

भक्त नामदेव जी ने यह भी कहा है यदि जीव तीर्थों पर पिंड भराए, काशी में असि नदी के किनारे रहता हो, चारों वेद उसे कंठस्थ हों, ब्राह्मण वाले षट कर्म भी करता हो तो यह लाभदायक नहीं है। केवल प्रभु का नाम ही भवसागर से पार करवाने वाला साधन है :

भक्त नामदेव जी कहते हैं कि मुझ अज्ञानी के लिए नाम रूपी लाठी ही सहारा है। प्रभु हर जगह मौजूद है। प्रभु ही सब जानने वाला, देखने वाला भाव ज्ञानी है। जीव तो अज्ञान के अंधकार से ग्रस्त है :

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
(पन्ना ७२७)

भक्त नामदेव जी की बाणी मानव को शुभ और नेक कर्म करने की प्रेरणा देती है। भक्त नामदेव जी की बाणी मौत का एहसास और गर्व त्यागने का संदेश देती है :

काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥ *(पन्ना ६९२)*

भक्त नामदेव जी के अनुसार संसार के जीवों की स्थिति डाल पर बैठे उन पक्षियों की है, जिन्होंने वहां स्थायी तौर पर नहीं रहना है। जीव को उसी स्थिति में रहना होता है जिसमें उसे प्रभु रखता है :

कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥
कबहू घर घर टूक मगावै ॥
कबहू कूरनु चने बिनावै ॥ . . .
भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥
जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥ (पन्ना ११६४)

भक्त नामदेव जी के अनुसार प्रभु-सुमिरन का तभी लाभ है यदि पहले अंदर से तृष्णाओं की अग्नि को शांत कर लिया हो। मन में मैल रखना और दिखावे के लिए समाधि लगाना उसी तरह है जैसे सांप केंचुली उतार देता है पर अंदर से विष नहीं छोड़ता। बगुला पानी में ऐसे खड़ा होता है जैसे समाधि लगाई हो पर ध्यान शिकार में होता है :

सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥
उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥
काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ॥
जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥ (पन्ना ४८५)

भक्त नामदेव जी कहते हैं कि जैसे स्वर्णकार बातचीत करते समय अपना ध्यान कुठाली में पड़े सोने की तरफ रखता है; पतंग उड़ाने वाला साथियों से बातचीत करता है परंतु उसका ध्यान पतंग में ही होता है; पनिहारी सखियों संग बतियाती हुई अपना ध्यान सिर पर रखे मटके में ही रखती है; गाय चारा चरती हुई बछड़े की तरफ ध्यान रखती है; माता घर के कार्य करती है किंतु ध्यान बच्चे में रखती है इसी प्रकार नाम अभ्यासी को जीवन के सभी कार्य व्यवहार करते हुए भी अपना ध्यान प्रभु-सुमिरन में ही लगाए रखना चाहिए :

आनीले कागदु काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले ॥
पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डोरी राखीअले ॥
मनु राम नामा बेधीअले ॥
जैसे कनिक कला चितु मांडीअले ॥ (पन्ना ९७२)

भक्त नामदेव जी के अनुसार परमात्मा संसार का मूल है। वो युगों से पूर्व भी था, हर युग में है और रहेगा। उस प्रभु के अनंत गुण हैं। सभी जीवों में एक रस व्याप्त है :

आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥
सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥ (पन्ना १३५१)

प्रत्येक जीव के अंदर प्रभु ने अपनी आत्मा को गुप्त रखा है। सारे जीवों में विद्यमान ज्योति का ज्ञान केवल प्रभु को है :

अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥
घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइआ ॥
जीअ की जोति न जानै कोई ॥
तै मै कीआ सु मालूमु होई ॥ (पन्ना १३५१)

भक्त नामदेव जी अपनी पावन बाणी में परमात्मा की महिमा के बारे बताते हैं कि प्रभु का वर्णन करना उतना ही कठिन है जितना गूंगे का स्वादिष्ट भोजन के स्वाद का वर्णन करना। प्रभु सब में व्याप्त है :

ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥
गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥ (पन्ना ६५७)

यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो प्रभु भी मिल जाता है। गुरु के बताये मार्ग पर चलकर जीव विकारों को मन से दूर कर लेता है और जीव का स्वभाव नाम जपने वाला हो जाता है और वहीं प्रभु नाम-सिमरन का अभ्यास उसे संसार रूपी भवसागर के पार उतरवा देता है :

भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥
जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥ (पन्ना ११६४)

भक्त नामदेव जी कहते हैं कि मुझे प्रभु उसी प्रकार प्रिय है जैसे मारवाड़ देश को पानी, ऊंठ को बेल, हिरन को ध्वनि, धरती को वर्षा, भंवरे को सुगंध, कोयल को आम, चकवी को सूर्य, हंस को मानसरोवर, स्त्री को पति, बच्चे को दूध, पपीहे को बादल, मछली को जल प्रिय है :

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥
जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥
तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥
जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥
जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥२॥ . . .
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥
सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥ (पन्ना ६९३)

भक्त नामदेव जी की बाणी में प्रेमा-भक्ति पर विशेष ज़ोर है। सच्चे भक्त को प्रभु मिल जाता है। भक्त नामदेव जी कहते हैं ऐसे मिलाप से जीवन सफल हो जाता है। जिसे परमात्मा प्राप्त हो जाता है उसे अनहत ध्वनि सुनाई देने लगती है; उसके अंदर सदैव नाम रूपी बादलों की वर्षा होने लगती है। गुरु की शिक्षा और सत्संग से मन निर्मल हो जाता है। वह जीव मूल्यवान हो जाता है जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सोने में परिवर्तित हो जाता है। वह प्रभु में ही आत्मसात हो जाता है जैसे घड़े का पानी

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जातिगत-भेदभाव विरोधी विचार

-डॉ. नवरत्न कपूर*

चार वर्ण : हिंदू धर्म में सांसारिक मनुष्यों को चार वर्णों में विभक्त किया गया है-- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। श्री गुरु रामदास जी ने इनका उल्लेख निम्नलिखित पंक्ति में किया है, यथा :

ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥ (पन्ना ८६१)

इन चारों वर्णों में कुल तथा गोत्र के अतिरिक्त आजीविका के साधनों में अंतर होने के कारण यह क्रम अत्यधिक बढ़ता गया। फलत: अपने अपने रोज़ी-रोटी के साधनों की उच्चता दर्शाने के कारण लोगों में खींचतान बढ़ती गई। सभी सिक्ख गुरु साहिबान ने जात-पात का डटकर विरोध किया और समस्त मानवता को परस्पर प्यार एवं प्रेम-भावना से मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा दी। प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने तो जात-पात के अभिमान की संखिए के ज़हर से तुलना की है, यथा:

जाती दै किआ हथि सचु परखीऐ ॥
महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ॥ (पन्ना १४२)

प्रभु-द्वार पर जात-पात की पूछताछ नहीं होती। जो कोई परमात्मा का नाम-सिमरन करता है, उसे लोक-परलोक में स्वत: बड़प्पन प्राप्त हो जाता है। इस संबंध में श्री गुरु रामदास जी का पावन कथन है :

तुम्हरा जनु जाति अविजाता हरि जपिओ पतित पवीछे ॥ . . .
जाति अजाति कोई प्रभ धिआवै सभि पूरे मानस तिनछे ॥ (पन्ना ११७८)

भक्त रविदास जी ने तो चारों वर्णों के प्राणियों को यही समझाया है कि प्रभु-भक्ति करने वाला व्यक्ति मन से पवित्र केवल स्वयं नहीं होता बल्कि वह इसके माध्यम से अपनी कुल का उद्धार भी कर देता है, यथा :

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ (पन्ना ८५८)

इन्हीं कारणों से श्री गुरु नानक देव जी ने जात-पात को व्यर्थ बताया और सभी को यही शिक्षा दी कि प्रत्येक व्यक्ति को भला मनुष्य कहलाने के लिए स्वच्छ आचरण वाला होना अनिवार्य है। चरित्रवान व्यक्ति का सम्मान जीवन भर बना रहता है। एतद्दर्थ श्री गुरु नानक देव जी के मनोहर वचन प्रस्तुत हैं :

फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥
सभना जीआ इका छाउ ॥
आपहु जे को भला कहाए ॥
नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥
(पन्ना ८३)

जातिय व्यवस्था का सही स्वरूप : ब्राह्मण-सिक्ख गुरु साहिबान के जीवनकाल में अधिकांश हिंदू रियासतों के राजाओं के मुख्य मंत्री अथवा पथ-प्रदर्शक 'ब्राह्मण' ही होते थे किंतु उन्होंने इस

**१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नजदीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)*

बात की चिंता त्यागकर 'ब्राह्मण' शब्द का आध्यात्मिक विश्लेषण करने में कोई संकोच न किया। श्री गुरु नानक देव जी ने जाति के स्थान पर भले कर्मों को प्राथमिकता दी और इस संबंध में 'ब्राह्मण' की परिभाषा निम्नांकित पद में दी :

सो ब्रहमणु जो बिंदै ब्रहमु ॥
जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥
सील संतोख का रखै धरमु ॥
बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥
सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥ (पन्ना १४११)

इसी मंतव्य की पुष्टि श्री गुरु अमरदास जी ने भी इस प्रकार की, यथा :

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥(पन्ना ११२७)

भक्त कबीर जी के निम्नलिखित पद में भी यही स्वर गूंजता है, यथा :

गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥
(पन्ना ३२४)

'ब्रहम बिंदो' शब्द वस्तुत: संस्कृत के ब्रहंमजिद का अपभ्रंश रूप है। इसका अर्थ है : "ब्रह्म के बारे में विचार करने वाला" अथवा "ब्रह्मज्ञानी" एतद्दर्थ दो पद उद्धृत हैं :

-कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारे ॥ (पन्ना ३२४)
-ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥
(पन्ना २७२)

क्षत्रिय : 'क्षत्रिय' शब्द का अपभ्रंश रूप पंजाबी भाषा में 'खत्री' है।

क्षत्रिय परिवार में जन्में श्री गुरु नानक देव जी ने शौर्य-प्रदर्शन करने वाले 'क्षत्रिय' की परिभाषा में (Definition) में 'दानशीलता' (Generosity) का गुण भी जोड़ दिया। 'खेतु' युद्ध क्षेत्र, (Battle Field) तथा अनाज उगाई जाने वाली ज़मीन (Cultivable land) का श्लेषार्थ भरकर उन्होंने कहा :

खत्री सो जु करमा का सूरु ॥
पुंन दान का करै सरीरु ॥
खेतु पछाणै बीजै दानु ॥
सो खत्री दरगह परवाणु ॥ (पन्ना १४११)

यही नहीं उन्होंने यह भी फरमान किया कि जाति जन्म से नहीं कर्म से निश्चित होती है :

जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥
(पन्ना ३३)

श्री गुरु रामदास जी ने तो यहां तक कह दिया कि संत स्वभाव वाले महापुरुषों की कोई जाति नहीं होती। स्वयं ईश्वर ही उनकी जाति है, यथा :

संत जना की जाति हरि सुआमी तुम्ह ठाकुर हम सांगी ॥ (पन्ना ६६७)

चारों वर्णों की एकात्मकता का उद्घोष पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के निम्नलिखित पंक्ति में निहित है :

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ (पन्ना ७४७)

दूसरों को शिक्षा देना आसान होता है। यदि मनुष्य स्वयं भी उसी सिद्धांत का पालनकर्ता हो तो महान कहलाता है। यही कारण है कि श्री गुरु नानक देव जी ने अत्यंत विनम्रता दर्शाते हुए खुद को 'नीच' कहने में संकोच नहीं किया। उनका निम्नलिखित पद इस तथ्य का

सूचक है :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥
(पन्ना १५)

प्रभु की कृपा दृष्टि की याचना करने वाले श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी धार्मिक यात्राओं के दौरान भक्तों की वाणी एकत्र करते समय जात-पात का भेदभाव नहीं किया। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यदि सूरदास, जैदेव तथा रामानंद जैसे ब्राह्मणों की बाणी को अपनाया, वहीं दूसरी ओर सैण 'नाई', नामदेव 'छींबें' तथा रविदास 'चमार' जैसी जातियों में उत्पन्न भक्तों की बाणी को सम्मानपूर्वक स्थान दिया। यही नहीं श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्राप्त भक्तों के उन मनोहर वचनों का भी 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलन किया, जिनमें उन्होंने अपने पूर्वज संतजनों को अपना प्रेरणास्रोत बताया है, गुरबाणी का सशक्त प्रमाण है :

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥१॥
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥२॥
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥३॥
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥४॥ . . .
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥
कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ॥
(पन्ना ४८७)

इस प्रकार सिक्ख गुरु साहिबान ने जात-पात, छूआछूत तथा ऊंच-नीच जैसी बुराइयों का विरोध किया। उसी सद्भावना को भाई गुरदास जी अपनी 'वार' में इस प्रकार दर्शाया है :

पारब्रहमु पूरन ब्रहमु कलिजुगि अंदरि इकु दिखाइआ।
चारे पैर धरम्म दे चारि वरनि इकु वरनु कराइआ।
राणा रंकु बराबरी पैरी पावणा जगि वरताइआ ॥
(वार १:२३)

अमेरिका की 'येल यूनिवर्सिटी' में 'धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन विभाग' (Comparative Studies of Religions Deptt) से संबद्ध प्रो जे सी आर्चर ने लिखा था : "श्री गुरु ग्रंथ साहिब का धर्म एक विश्वव्यापी तथा क्रियात्मक धर्म है, आज समूचे संसार को इसके शांति और प्रेम भरे संदेश की आवश्यकता है। (The Religion of Sri Guru Granth Sahib is a universal and practical religion. The world needs today this message of peace and love: (Porf. J. C. Archer : The Sikhs in Religion to Hindu, Muslims, Christians and Ahmediyas (Astudy in comparative Religion, P. 105, Princetor, 1946). ❁

Final

जीवन प्रकाश : श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

सृष्टि की रचना कर परमात्मा ने जिस तरह उसमें मोह-माया को व्याप्त कर दिया उससे जीवन विषम हो गया। माया में लिप्त मनुष्य नाना पाप कर्म करता रहता है और परमात्मा के निकट नहीं आ पाता। यह परमात्मा का खेल है जिसे वह स्वयं ही समझ सकता है किंतु उस दयालु परमात्मा ने राह भी खोल दी। जो इस मोह-माया के भेद को समझ कर उससे विरत हो गया उसका जीवन सफल हो गया परंतु यह इतना सरल नहीं है। मनुष्य का सबसे बड़ा संकट ही है माया के जाल से निकल पाना। इसके लिए जब तक कोई राह दिखाने वाला और सच-झूठ का अंतर बताने वाला न हो मनुष्य का माया के प्रति आकर्षण बना ही रहता है। जीवन व्यर्थ चला जाता है। एक सतिगुरु ही है जो निराशा और अज्ञानता से निकलने में मनुष्य का सहायक है। भाई गुरदास जी ने इसी लिए सतिगुरु जी को बंदी छोड़ की उपमा दी :

सतिगुरु पारसि परसिऐ कंचनु करै मनूर मलीणा।
सतिगुरु बावनु चंदनो वासु सुवासु करै लाखीणा।
सतिगुरु पूरा पारिजातु सिंमलु सफलु करै संगि लीणा।
मान सरोवरु सतिगुरु कागहु हंसु जलहु दुधु पीणा।
गुर तीरथु दरिआउ है पसू परेत करै परबीणा।
सतिगुर बंदीछोड़ु है जीवण मुकति करै उडीणा।
गुरमुखि मन अपतीजु पतीणा। (वार २६:२०)

सतिगुरु जी की महिमा को समझने का प्रयास करना है तो भाई गुरदास जी के कथन ही पर्याप्त हैं। भाई गुरदास जी ने सतिगुरु जी को पारस कहा जिसमें लोहे को भी सोना बना देने की क्षमता है। सतिगुरु जी पावन चंदन हैं जो अपने आस-पास को अपनी सुगंध से महका कर उसे बहुमूल्य बना देता है। सतिगुरु जी पारिजात वृक्ष है जो सेमल के पेड़ को भी गुणवान बना देता है। सतिगुरु जी मानसरोवर हैं जो कौवे को हंस जैसा उज्ज्वल कर देते हैं। सतिगुरु जी तीर्थ हैं जहां पशु और प्रेत भी बुद्धिमान बन जाते हैं। सतिगुरु जी उन सारे बंधनों से मुक्ति दिलाने वाले हैं जो जीवन को सच्चे आनंद और परमात्मा की कृपा से दूर रखे हुए हैं। सतिगुरु जी शंका और दुविधाओं से भरे मन को शांत, सहज और संतुष्ट बना देते हैं। इस दृष्टि को धारण करते हुए गुरसिक्ख जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में जाता है तो उसे उपनी सारी समस्याओं का समाधान और दुखों से निदान मिल जाता है। इस दृष्टि को धारण किए बिना न तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महत्ता को जाना जा सकता है और न ही उनसे ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन का उद्धार किया जाना संभव है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन कार्य संपूर्ण होने के बाद जिस श्रद्धा और सम्मान के साथ श्री गुरु अरजन देव जी बाबा बुड्ढा जी के सिर पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब को रखकर

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: +९१९४१५९-६०५३३*

अपने कर-कमलों से चंवर करते हुए नंगे पांव चलते हुए श्री हरिमंदर साहिब ले गए और वहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश हुआ उसी दिन भविष्य की रूपरेखा तय हो गई थी कि सिक्खों का भविष्य कैसे सुरक्षित होने वाला है। श्री गुरु अरजन देव जी ने वहीं ज़मीन पर लेटकर रात गुजारी जो संदेश था कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का एक गुरसिक्ख के जीवन में क्या स्थान होगा। जो मुक्तिदाता हो उसे प्राणों से अधिक सम्मान देना और प्रीति करना स्वाभाविक है। सिक्ख संगत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप में आने और प्रतिष्ठित होने से एक नया उत्साह पैदा हो गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरतागद्दी सौंपकर इस उत्साह और आस्था को अमरत्व प्रदान कर दिया। आज करोड़ों सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब के शरणागत होकर अपने जीवन को लोहे से सोने में बदलने की कामना कर रहे हैं। लोहे-सा जीवन सोने-सा बन जाये यह कैसे संभव है, यदि अवगुण भरे पड़े हैं तो जीवन का क्या मोल रह जाता है :

सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ॥
(पन्ना २०)

श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि जब तक तन में बल है और यह तन है, यही अवसर है गुणों को प्राप्त करने का। यदि जीवन को लोहे से सोना नहीं बनाया अर्थात् गुणों को धारण नहीं किया तो एक दिन यह तन भस्म की ढेरी बन जायेगा और व्यर्थ चला जायेगा। गुणों के बिना तो यह तन माया की मैल से भरा हुआ पुतला है :

गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥
विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥
सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीए ॥
नानक गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥ (पन्ना ३६७)

यदि गुण नहीं हैं तो ऐसा अहंकारी व्यक्ति जीते हुए भी मृतक के समान है और उसके जीवन से किसी को भी कोई लाभ नहीं होता। किंतु जिसने सतिगुरु जी की मति लेकर जीवन के तत्व को जान लिया उसके जीवन में गुण उसी तरह प्रकट होने लगते हैं जैसे सरोवर में कमल। तत्कालीन धार्मिक परिदृश्य से अलग हटते हुए गुरु साहिबान ने न तो कभी अपनी पूजा कराई और न ही किसी अलौकिक शक्ति से लोगों का कल्याण कर देने की बात की। गुरु साहिबान ने जो राह दिखाई उससे मनुष्य स्वयं अपने अंदर गुणों को धारण करते हुए अपना उद्धार कर सकता था। यह गुण गुरसिक्ख में प्रकट हो सकें ऐसी मति देने का उपकार अर्थात पारस बनकर गुरसिक्ख को सोना बना देने का काम गुरु साहिबान ने किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण उन गुणों को जीवन में प्रकट कर सोना बन जाने जैसा है। यह श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण के बिना संभव नहीं है :

बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥ (पन्ना १८)

अवगुणों से भरपूर मनुष्य को कहीं भी ठौर नहीं मिलता और वह निरंतर दुख ही सहन करता रहता है :

कुबुधि चवावै सो कितु ठाइ ॥
किउ ततु न बूझै चोटा खाइ ॥ (पन्ना ९४४)

सदगुण श्री गुरु ग्रंथ साहिब से ही मिलते हैं :

कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥
सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥ (पन्ना ९४४)

जब मन की आस्था श्री गुरु ग्रंथ साहिब

में टिक जाती है, मन गुरु की मति लेने को तैयार हो जाता है तभी संसार में माया-मोह की निस्सारिता सामने आती है और मन में परमात्मा का भय और उसकी प्रीति प्रकट होती है। परमात्मा की सत्ता के दर्शन होते हैं और स्व मिट जाता है। स्व का मिटना ही अवगुणों का दूर होना है। परमात्मा की सत्ता को जान लेना ही गुणों का प्रकट होना है। इसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब से मति लेकर ही संभव किया जा सकता है। गुरु शब्द अवगुणी मनुष्य के लिए पारस के समान है जो उसे सोने-सा गुणवान बना देता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में आने पर जीवन गुणों की सुगंध से महक उठता है और मूल्यवान बन जाता है। जब तक जीवन से प्राप्त होने वाले वास्तविक आनंद का पता नहीं होता मनुष्य जीवन को लापरवाह ढंग से लेता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब से प्राप्त ज्ञान जब उसे मुक्ति के लिए मनुष्य जीवन के रूप में प्राप्त सुअवसर का बोध कराता है तो वह जीवन को पूरी गंभीरता से लेकर गुणों की राह पर अग्रसर हो जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण उसे निरंतर सुमार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाली और अवगुणों से दूर रखने वाली सिद्ध होती है और गुण उसके जीवन में खिलने और महकने लगते हैं अर्थात् लाभकारी परिणाम देने लगते हैं। सतिगुरु की महानता है कि उसने गुरु और सिक्ख के बीच का भेद मिटाकर एकरूपता स्थापित कर दी है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं पांच प्यारों से अमृतपान करते हैं और चमकौर की गढ़ी में उनकी आज्ञा मानते हैं। चंदन की सुगंध से पूरे वन का सुगंधित हो जाना ही 'आपे गुर चेला' की व्याख्या है। चंदन का वृक्ष उदारता में अपनी सुगंध सारे वन में समाहित कर रहा है, सतिगुरु जी प्रीति में अपने सारे गुण गुरसिक्ख को दे रहा है :

सतिगुर के जीअ की सार न जापै कि पूरै सतिगुर भावै ॥
गुरसिखां अंदरि सतिगुरू वरतै जो सिखां नो लोचै सो गुर खुसी आवै ॥
सतिगुर आखै सु कार कमावनि सु जपु कमावहि गुरसिखां की घाल सचा थाइ पावै ॥

(पन्ना ३१७)

भाई गुरदास जी ने गुरबाणी का संग और सेवा की, जिसके फलस्वरूप आदरणीय बन गये। भाई मनी सिंघ जी, भाई नंद लाल जी का स्थान सदा के लिए सिरमौर हो गया। सतिगुरु किस तरह कृपा करेगा यह वही जान सकता है और जैसा उसे प्रिय लगे वैसी कृपा की बारिश कर के अपने सिक्ख को निहाल कर देता है। गुरबाणी जब मन में बस जाये तो सिक्ख की मनचाही इच्छायें पूरी होने लगती हैं। सिक्ख की इच्छायें पूरी करने में सतिगुरु को आनंद आता है। जो सिक्ख सतिगुरु जी की आज्ञा मानकर अपना जीवन व्यतीत करता है उसका एक-एक कार्य सफल होता है अर्थात् हर कदम वह आत्मिक उन्नति की ओर बढ़ता जाता है। माया के जाल में फंसा जीवन संत स्वरूप हो जाता है। *"जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥"* शबद ने भाई लहिणा जी का जीवन ऐसा बदला कि उन्हें गुरतागद्दी पर आसीन करते हुए श्री गुरु अंगद देव जी बना दिया। श्री गुरु अमरदास जी का जीवन भी गुरु शबद के असर का परिणाम था। इन गुरु साहिबान के साथ ही कितने ही पापियों के जीवन बदल गये। श्री गुरु नानक साहिब ने बाणी उच्चारित की *"उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥ धोतिआ जूठि न उतरै जे*

Final

सउ धोवा तिसु ॥" जिसे सुनकर सज्जन ठग जैसे पापी के भाव बदल गये और वह धर्म के मार्ग पर आकर ऐसा ज्ञानवान और गुणी बन गया कि अपने क्षेत्र के लोगों का उद्धार करने योग्य हो गया। सिक्ख इतिहास ऐसी उदाहरणों से भरा पड़ा है कि गुरसिक्खों के मन में बैठ सतिगुरु जी ने कृपा के झरने खोल दिये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब इसी लिए एक आध्यात्मिक गुरु ही नहीं एक सिक्ख के जीवन का अभिन्न अंग है जो सदा के लिए गुरसिक्ख के मन में बसकर उसके एक-एक पल को संवारने की शक्ति रखते हैं। इसलिए गुरु की तुलना भाई गुरदास जी ने मानसरोवर से की जिसमें उतरकर कौवा भी हंस बन जाता है :

सबदि रते वड हंस है सचु नामु उरि धारि ॥
सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥
सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥
नानक हउ तिन कै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥ *(पन्ना ५८५)*

श्री गुरु रामदास जी ने अपने उपरोक्त वचन में उन्हें श्रेष्ठ हंस अर्थात् परम पुरुष कहा है जो सदा गुरु शबद से जुड़े हुए हैं और मन में परमात्मा का नाम जप रहे हैं। ऐसे परम पुरुष सदा गुरु शबद से जुड़े रहते हैं और परमात्मा से प्रीति में लीन रहते हैं। जो सदा गुरु शबद से जुड़ा हुआ है वह सदा निर्मल है और उस पर कभी अवगुणों, कुविचारों का प्रभाव नहीं पड़ता। सिक्ख इतिहास में हुए बलिदान इसकी सबसे बड़ी गवाही हैं। गुरु साहिबान तो परमात्मा तुल्य थे और उसी के अनुरूप उनका जीवन आचरण रहा किंतु सिक्खों की दृढ़ता पर दृष्टि डालें तो इस बात की सत्यता सिद्ध होती है। गुरु और गुरु शबद से जुड़े हुए सिक्खों ने असहय कष्ट सहे, आरे से चिरवाये गये, चर्खियों पर चढ़कर शहीद हुए, अंग-अंग कटवाये गये किंतु अडोल रहे। हंस थे हंस ही रहे। उन पर डर, लोभ, निराशा की कोई मैल नहीं चढ़ी। उन पर परमात्मा की ऐसी कृपा हुई कि सारे कष्ट वे हंसते हुए सहन कर गये और हंस कर बलिदान दिए। यह सिक्ख इतिहास की एक विशेषता है कि सारे बलिदान, स्वेच्छा से, प्रसन्नता से और उत्साहपूर्वक दिए गये। कोई भी बलिदान ऐसा नहीं था कि कोई और रास्ता न बचा हो या परिस्थियां अचानक बन गई हों। भावना की यह उच्चता ही सिक्ख कौम की उन्नति और खुशहाली का रहस्य है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब ने सबसे बड़ा उपकार किया है गुरसिक्ख को उसका मूल पहचानने में सहायक होकर और सहज अवस्था की प्राप्ति का मार्ग दिखा कर। अब तक संसार में रजो गुण, तमो गुण और सतो गुण की ही चर्चा हो रही थी। गुरु साहिबान ने पहली बार कहा कि सतो गुण भी मनुष्य के अहम् का पोषण करने वाला है, इसी लिए वर्षों जप-तप करने और हठ, योग, त्याग आदि के बाद भी मोक्ष नहीं प्राप्त होता। विकारों के बंधन टूट नहीं पाते। गुरु साहिबान ने इन तीनों से ऊपर उठकर सहज अवस्था की बात की और मनुष्य को सच से अवगत कराया कि जब तक स्व नहीं मिटता परमात्मा के लिए स्थान नहीं बन पाता। यह अद्भुत किंतु मूल विचार था जिससे संसार आंखें मोड़े हुए था। स्व को मिटाने के लिए परमात्मा के निराकार एकत्व में आस्था और उसके सर्वव्याप्त रूप को देख पाने की दृष्टि चाहिए। यह वे सर्व श्रेष्ठ गुण हैं, जिनके बारे में श्री गुरु नानक साहिब ने कहा था इनके

बिना और कुछ काम नहीं आने वाला *"बिनु गुण काम ना आवई ॥"* इनके लिए पूर्ण समर्पण चाहिए जिसकी प्रेरणा श्री गुरु ग्रंथ साहिब से पल-पल मिलती है :

किछहू काजु न कीओ जानि ॥
सुरति मति नाही किछु गिआनि ॥
जाप ताप सील नही धरम ॥
किछू न जानउ कैसा करम ॥१॥
ठाकुर प्रीतम प्रभ मेरे ॥
तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई भूलह चूकह प्रभ तेरे ॥१॥ रहाउ ॥
रिधि न बुधि न सिधि प्रगासु ॥
बिखै बिआधि के गाव महि बासु ॥
करणहार मेरे प्रभ एक ॥
नाम तेरे की मन महि टेक ॥२॥ (पन्ना ८९४)

गुरसिक्ख के लिए समर्पण, परमात्मा की राह पर चलने का पहला कदम है, जिसकी शिक्षा श्री गुरु ग्रंथ साहिब से मिलती है। गुरसिक्ख पहले इस बात को निश्चित रूप से जान लेता है कि उसे जीवन को संवारने की कोई विधि नहीं आती। इसके लिए उसके पास न तो कोई चेतना है न ही कोई ज्ञान है। उसके बाद यह भी जान लेता है कि न तो उसे कोई जप-तप करना आता है न ही उसमें शील, संयम जैसे कोई गुण हैं। उसे यह भी नहीं पता कि परमात्मा की कृपा कैसे मिलती है। गुरसिक्ख बस इतना जानता है कि परमात्मा सर्वोच्च सत्ता है, जिसके प्रति प्रीति उसके मन में परिपूर्ण है। इसी प्रीति से उसके मन में भाव बन जाता है कि एक परमात्मा ही है दूसरा कोई नहीं और वह उसका ही है। समर्पण की इस अवस्था में वह स्वीकार कर लेता है कि न तो उसके पास कोई धन-दौलत है, न कोई बुद्धि है और न ही कोई जप-तप का बल है। इसके विपरीत वह अपने को विकारों और अवगुणों से भरा हुआ देखकर याचना करता है कि यदि मन में परमात्मा का आधार बना रहे क्योंकि उसके लिए जो कुछ करना है परमात्मा को ही करना है अन्य किसी को नहीं। स्व को मिटा देने की और परमात्मा को संपूर्णता में धारण कर लेने की ऐसी महान प्रेरणा बस श्री गुरु ग्रंथ साहिब से ही प्राप्त होती है। इसी लिए भाई गुरदास जी ने सतिगुरु जी को बंदी छोड़ कहा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण लिए बिना यह संभव नहीं है :

बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते करम कमाहि ॥
बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥ (पन्ना ५५२)

गुरसिक्ख के वे सारे कर्म व्यर्थ हैं और बंधन की तरह हैं यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुकूल नहीं हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आज्ञा को माने बिना कोई ठौर नहीं है। आवागमन में पड़े रहकर सारे जीवन व्यर्थ चले जायेंगे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को जीवन आधार बना लेने में ही मुक्ति है।

पोथी परमेश्वर का थान से गुरतागद्दी का प्रसंग

-डॉ जसबीर सिंघ साबर*

आधुनिक समय में यह रुझान बढ़ता जा रहा है कि हम किसी भी अनुशासन को उसकी पृष्ठभूमि को समझे बिना पाठ-मुक्त परिणाम निकाल लेते हैं जो आम तौर पर वाद-विवाद का कारण बनकर गलत धारणाएं बना देते हैं। अधूरा ज्ञान समस्याओं को सुलझाता नहीं बढ़ाता ज़रूर है। प्रत्येक जिज्ञासु की चेतना में यह जिज्ञासा पैदा होनी स्वाभाविक लगती है कि संसार में बहुत सारे धर्म हैं और उनके अपने धर्म ग्रंथ भी है। निःसंदेह प्रत्येक धर्म को अपना धर्म ग्रंथ जान से भी अधिक प्यारा होता है परंतु विश्व में केवल एक ही पावन ग्रंथ है जिसको गुरु का दर्जा प्राप्त है वो है श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी 'धुर की बाणी', शब्द गुरु के रूप में इलाही प्रकाश एवं परमार्थ-जीवन के लिए अनमोल जीवन युक्ति है। इसको किसी भी पक्ष से विचारते समय मानव सोच दंग (चक्ति) होकर रह जाती है कि इस महान सर्वश्रेष्ठ बाणी की रोशनी अखंडकल ज्योति की भांति धार्मिक दर्शनीय, संगीतक, साहित्यक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सभ्याचारक संसार के अनंत पसारों में फैलती है। इसके एक-एक वाक्य का नाद सुनते ही मानसिक अवस्था बदल जाती है। सर्वसांझीवालता के गुणों से भरपूर इसकी मानव हेतु विचारधारा, मानव चेतना में धार्मिक एकता, प्रभु एकता एवं मानव एकता में विश्वास दृढ़ करवाते हुए प्रेम भावना के मधुर स्वर के द्वारा ऐसी रूहानियत का माहौल पैदा करती है जो मानव मन को आनंद विभोर कर देती है। *'पोथी परमेसर का थान'* गुरतागद्दी प्राप्त करने का सफ़र तय करने वाले इस लासानी ग्रंथ की संपूर्णता का शोभनीय स्थान है, श्री दमदमा साहिब जो पहले तलवंडी साबो के नाम से प्रसिद्ध था और आज यह सिक्ख धर्म के पांच तख़्तों में से एक तख़्त है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'पोथी परमेसर का थान' से गुरु पद क्यों, किसने, कहां और कैसे प्रदान किया और इस कार्य की संपूर्णता के लिए कौन सहयोगी था आदि कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका मानव चेतना में पैदा होना स्वाभाविक क्रिया है। जहां तक पहले प्रश्न का संबंध है उसका उत्तर है कि कोई भी ग्रंथ तभी गुरु पद का अधिकारी बनता है जब उसके आस-पास धर्म विभाजन, नसल विभाजन, ऊंच-नीच विभाजन, जात-पात विभाजन आदि की मानवता को बांटने वाली दीवारें खड़ी न की हों। वह ग्रंथ जब "सम दर्शी एक दृष्टिता" की भावना के अंतरगत समूची मानवता को कलावे में लेते हुए उनके विकास एवं विगास के दैवी संदेशों के द्वारा रूहानियत के माहौल को पैदा करता है तब वह ग्रंथ गुरु बन जाता है। पंचम पातशाह गुरु श्री गुरु अरजन देव जी के द्वारा आदि ग्रंथ साहिब की संपादना से पूर्व यह 'पोथी परमेसर का थान' के रूप में आदरणीय मानी जाती थी। आदि ग्रंथ साहिब के संपादना कार्य की संपूर्णता और इस पावन ग्रंथ का श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाश तथा बाबा बुड्ढा जी की पहले ग्रंथी के रूप में नियुक्ति के साथ पोथी साहिब पावन बीड़ के रूप में आदि ग्रंथ साहिब के नाम के साथ प्रसिद्ध हुई। छठे, सातवें और आठवें गुरु साहिबान के द्वारा बाणी तो नहीं उचारी गई परंतु वह आदि ग्रंथ साहिब जी को पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की तरह ही आदर-सम्मान देते रहे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के द्वारा बाणी

13, Guru Teg Bahadar Nagar, PO. Khalsa college, Sri Amritsar-143001, M. +919781533108

Final

तो उचारी गई परंतु साथ ही उनकी अमर शहीदी हो गई। जिसके कारण उनके जीवन काल में उनकी बाणी आदि ग्रंथ साहिब का हिस्सा नहीं बन पाई। दसवें गुरु जी के श्री अनंदपुर साहिब से मुक्तसर साहिब तक जंगों-युद्धों का सफर तय करते हुए तलवंडी साबो पहुंचने तक के एक सदी से अधिक समय के अंतराल ने आदि ग्रंथ साहिब के स्वरूपों के कई उतारे प्रचलित कर दिए थे। नि:संदेह करतारपुर के सोढियों के पास (श्री गुरु तेग बहादर बाणी रहत) आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप सुरक्षित था परंतु मीणियों, मसंदों, उदासियों आदि ने भाई बन्नो की तरह कई और स्वरूप तैयार कर लिए थे।

मालवे की धरती को दसवें गुरु जी से पहले श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब, श्री गुरु हरिराय साहिब और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की चरण स्पर्श प्राप्त हो चुका था। भूगोलिक दृष्टि से यह इलाका पंजाब के मुगल हाकिमों के कहर से बचा भी था। जिसके कारण इस धरती के निर्छल एवं निर्मल मनों वाले ऋष्ट-पुष्ट मालवियों ने सिक्ख गुरु साहिबान और सिक्खों का भय-मुक्त होकर भरपूर स्वागत करते हुए स्थान पर स्थान उनको स्वागतम् बोला और सिक्ख धर्म को धारण करने में गर्व महसूस किया।

खिदराणे की ढाब से अनेक गांवों में से निकलते समय दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, बठिंडे से होते हुए जब लक्खी जंगल पहुंचे तो वहां के शांत वातावरण में रहने का मन बना लिया। आप जी के इस टिकाने के कारण सिक्ख संगत के यातायात ने इस रेतली मरुस्थल धरती को हरी-भरी बना दिया। यहां से दशमेश पिता जी ने फिर से अपना सफ़र आरंभ करते हुए तलवंडी साबो के नज़दीक एक टिब्बे के पास पहुंचकर उसे समतल करने का आदेश दिया। इसके बाद में आपने कमरकस्सा खोलते हुए अपने शस्त्र उतार दिए और वहां बैठकर आराम करने लगे। यही स्थान आज तख़्त श्री दमदमा साहिब के रूप में जाना जाता है। मालवा देश रटन की साखी पोथी के अनुसार इस स्थान को नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने गुरु की काशी बताते हुए यहां कार्य करने वाले को राजभाग, देग की प्राप्ति और बहुत महान् गुणवान होने का वरदान दिया। इसके साथ ही नवम् पातशाह ने यह भविष्य वचन भी किए कि यहां बड़ा स्थान बनेगा, नौ नेजे ऊंचा दमदमा होऊ स्वर्ण के कलस होंगे।

ऐसा ही वरदान दशम गुरु जी ने यहां से दक्षिण की और चाले पाने से पूर्व दिया कि :

यह है प्रगट हमारी कासी।
पढ़ है यहां ढोर मत नासी।
लेखक गुणी कविंद गिआनी।
बुध बड़ी हो अति गिआनी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपूर्णता, गुरबाणी की पाठ परंपरा, अर्थ परंपरा, सिक्ख साहित्य और सिक्खी की जगमग ज्योति बरकरार रखने का सार्थक कार्य दशम गुरु जी के द्वारा यहां तलवंडी साबो अर्थात् तख़्त श्री दमदमा साहिब में ही हुआ और इस कार्य में भाई मनी सिंघ जी का योगदान भाई गुरदास जी की तरह इतिहास का अंग बन गया। इस प्रसंग में प्रो साहिब सिंघ जी का कथन बिल्कुल ठीक है कि जैसे श्री गुरु अरजन देव जी ने भाई गुरदास जी को बाणी लिखने का कार्य सौंपा था वैसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई मनी सिंघ जी को इस कार्य के लिए लगाया था। प्रसिद्ध विद्वान डॉ शान भी इस मत की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि तलवंडी साबो पहुंचते ही जब सुख की सांस मिली तो कई मैदान मार आए इस जरनैल ने तुरंत ही जंग का कांटा बदलते हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सारी बाणी को उच्चारण एवं लिखने का कार्य शुरू कर दिया और लिखारी का कार्य दिया भाई मनी सिंघ जी को। दशम गुरु जी के द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का स्वरूप लिखवाने एवं भाई मनी सिंघ जी के द्वारा संवत् १७६३ को बीड़ लिखने का कार्य संपूर्ण होने की सूचना मिलती है।

भाई कान्ह सिंघ नाभा भी इसी मत को मानते हैं कि दशम गुरु जी ने अपने आत्मिक बल के साथ संपूर्ण श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी लिखवाया। बाबा इक़बाल सिंघ जी बड़ू साहिब वाले भी यह मानते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने मुखारबिंद से उच्चारण करके भाई मनी सिंघ जी से लिखवाया। यहां से यह पता चलता है कि उस समय 'धुर की बाणी' का यह स्वरूप आदि ग्रंथ साहिब जी के द्वारा ही प्रचलित था। श्री अनंदपुर साहिब, श्री चमकौर साहिब, श्री मुक्तसर साहिब आदि के युद्धों से मुक्त होकर जब दशम गुरु जी भाई डल्ले की तलवंडी साबो पहुंचे तो वहां आप जी ने उस स्थान पर कमरकस्सा खोल दिया। यहां किसी समय नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब भी ठहरे थे। यहां पर ही आप ने आदि ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी शामिल करते हुए संपूर्ण स्वरूप दोबारा से लिखवाया। बीड़ लिखने का कार्य किया भाई मनी सिंघ जी और बाबा दीप सिंघ जी ने इस कार्य को संपूर्ण करने संबंधी उनकी पूरी सहायता की। पुन: संपादित यही दमदमी बीड़ संपूर्ण होने के पश्चात समूचे सिक्ख पंथ में प्रमाणित रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में प्रवानित हुई है।

यहां पर यह नोट करने की ज़रूरत है कि दशम पातशाह बीड़ तैयार करवाने के साथ बाणी के पाठ-युक्त अर्थ भी करते रहे। जिनको भाई मनी सिंघ जी और बाबा दीप सिंघ जी ने एक मन और एक हृदय स्वर्ण करते हुए अपने मन के अंदर ग्रहण कर लिया। गुरु जी ने आप जी को आदेश दिया कि तुमने गुरसिक्खी जीवन जीना है और *'ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥'* के सिद्धांत अनुसार गुरबाणी के अर्थ सिंघों को पढ़ाने हैं और गुरबाणी के अनुसार जीवन जीने का पथ प्रदर्शन पेश करना है।

अब तो इस जागत ज्योति श्री गुरु ग्रंथ साहिब को देश की सर्वोच्च दुनियावी अदालत सुप्रीम कोर्ट ने भी न्यायक शख़्सियत प्रवान करते इस की पावनता, संपूर्णता एवं गुरता को स्थापित कर दिया है। *'बाणी गुरु गुरु है बाणी ॥'* की भावना के अंतरगत, कानूनी भाषा की परिभाषा अनुसार न्यायक शख़्सियत वह होती है जिस में व्यक्ति की पांच भूतक शरीर पक्ष तो हाज़िर नहीं होता परंतु उसकी शख़्सियत को हाज़िर नाज़िर मान लिया जाता है। २ अप्रैल २००२ को सुप्रीम कोर्ट के जज श्री ए पी मिश्रा और एम. आर. राय ने ८६ व्यक्तियों के द्वारा किए गए एक केस का फैसला देते हुए कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्खों के पूजनीक हाज़िर नाज़िर गुरु है। यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश हुआ हो वह स्थान पूजनीक और पावन बन जाता है। इस पावनता के आधार पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को न्यायक शख़्सियत के रूप में कानूनी मान्यता देने के सारे गुण मौजूद है। इसके विपरीत इसकी परिभाषा करना न्यायक शख़्सियत के अर्थ को कानूनी क्षेत्र में उस न्याय विधान से नीचे होगी जिसके आधार पर यह अस्तित्व में आया। तख़्त श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो पर आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को संपूर्णता प्रदान करने के पश्चात दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दक्षिण दिशा की तरफ चल दिए। आप जी अलग-अलग स्थानों पर ठहरने के पश्चात महाराष्ट्र प्रांत की धरती नांदेड़ पहुंचे जो आज अबिचल नगर तख़्त श्री हजूर साहिब के रूप में ऐतिहासिक स्थान के नाम से प्रसिद्ध है।

यहां दशम पिता ने ज्योति-जोति समाने से एक दिन पहले १७०८ ई को तख़्त श्री दमदमा साहिब में पूर्ण-संपादत की गई संपूर्ण दमदमी बीड़ के स्वरूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब को विधिवत गुरतागद्दी पर सुशोभित करते हुए समूह खालसा पंथ को श्री गुरु नानक देव जी की आरंभिक इलाही धुन निर्मल पंथ की निरंतरता में शब्द गुरु को पकड़ाते हुए सिक्ख धर्म में देहधारी गुरु की प्रथा को विराम लगा दिया। उस दिन से समूचे खालसा पंथ के लिए *"सब सिखन को हुकम है गुरू मानिओ ग्रंथ।"* श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी ही पूर्ण गुरु है और कोई नहीं हो सकता।

घाव अबी भरे नहीं . . . कब मिलेगी सज़ा सिक्खों के कातिलों को?

-*सिमरजीत सिंघ**

प्रति वर्ष जब भी नवंबर का माह आता है तो सिक्खों के दिमाग में नवंबर १९८४ का कत्लेआम घूंमने लगता है। अत्यंत कहर (तशुदुद) के दिन थे, जब दिल्ली तथा भारत के अन्य बड़े-बड़े शहरों की गलियों-मुहल्लों में से मानवीय चीखें कानों को फाड़ रही थीं, घरों में लगी अग्नि की लपटें गगन को छूह रही थीं। नारे गूंज रहे थे :

"खून का बदला खून से लेंगे।"
"सरदारों को जला दो, लूट लो, सरदारों को मार दो।"
"हिंदू भाई, मुसलिम भाई, सरदारों की करो सफाई।"

के नारों की आवाज़ें कान फाड़ने तक जा रही थीं। यह सारा रक्तरंजित साका ३१ अक्तूबर १९८४ ई को उस समय घटित हुआ जब दो सिक्ख नौजवानों स. बेअंत सिंघ व स. सतवंत सिंघ ने जून, १९८४ ई में श्री अकाल तख़्त पर किए गए आक्रमण का प्रतिशोध लेने के लिए भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को सुबह ९:१८ मिनट पर गोली मारकर कत्ल कर दिया था। उसको आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज़ दिल्ली में ले जाया गया। चारों ओर हाहाकार मच गई थीं। इंदिरा गांधी का पुत्र राजीव गांधी उस समय बंगाल गया हुआ था। इस वारदात का पता चलने पर वो ४:०० बजे शाम को दिल्ली पहुंच गया था। उस समय ज्ञानी ज़ैल सिंघ भी ५:०० बजे तक अपना दौरा बीच में ही छोड़कर दिल्ली पहुंच गए थे तथा आते ही पहले ६ बजकर ५५ मिनट पर राजीव गांधी को भारत का प्रधान मंत्री घोषित कर दिया।

उस समय देश-विदेश के मीडिए की नज़रें उन दो सिक्खों पर लगी हुई थीं जिन्होंने इंदिरा गांधी का कत्ल किया था। जब कि दूसरी तरफ पंजाब के बाहर रहते सिक्खों के लिए यह ख़बर मृत्यु का भयानक जंज़ाल बनी हुई थी। सारे देश में कांग्रेस-आई के कथित अधिकारी तथा वलंटियर सिक्खों के शत्रु बन गए थे।

३१ अक्तूबर, १९८४ ई को सिक्खों के मार-काट की घटनायें सबसे पहले कोलकाते में शुरू हुई। १ नवंबर के 'स्टेटमैन' अख़बार के अनुसार एक सिक्ख को सुबह ११:०० बजे राइटर बिलडिंग के पास पीटा गया। एक अन्य सिक्ख जो जी. टी. बोर्ड के कार्यालय के आगे खड़ा था, उस पर १:३० बजे हमला किया गया। नेशनल प्रेस ने रिपोर्ट की कि कांग्रेस-आई के अधिकारी तथा वलंटियर दोपहर के बाद कोलकाते के अलग-अलग इलाकों में भगदड़ मचाने लग गए, जिस पर स्थिति से निपटने के लिए फौज को बुला लिया गया तथा लगभग २:३० बजे फौज ने शहर का प्रबंध अपने हाथों में ले लिया।

मदरास में भी सिक्खों की दुकानों की खिड़कियां तोड़ दी गईं तथा दुकानदारों से ज़बरन दुकानें बंद करवा दी गईं। पंजाब एसोसियशन द्वारा चलाए जाते स्कूल की दो बसों को आग लगाकर जला दिया गया। उत्तर प्रदेश

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

में भी लूटपाट की घटनायों को आखों से देखने वालों के अनुसार विशेष रूप में कानपुर में सिक्ख विरोधियों का भारी इकट्ठ गलियों में इकट्ठा हो गया था। दुकानें बंद हो गईं तथा चारों ओर भगदड़ मच गई थी। मध्य प्रदेश, जबलपुर तथा इंदौर के सिक्खों की दुकानों व पैटरोल पंपों को आग लगा दी गई तथा भारी मात्रा में दंगाकारियों ने सिक्खों पर हमला कर दिया, जिस कारण फौज को सूचित करना पड़ा। उड़ीसा में सिक्ख विरोधियों ने भुवनेश्वर के सिक्खों पर हमला करके उनके ट्रकों को आग लगा दी।

दिल्ली में सिक्ख कत्लेआम ३१ अक्तूबर, १९८४ ई को दोपहर के बाद ही शुरू हो गया था क्योंकि दिल्ली में बहुत-से कांग्रेस-आई के पक्षी थे, इनमें से बहुत-से ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज़ में सुबह से दुख का प्रकटावा करने के लिए पहुंचे हुए थे। यहां तक कि अस्पताल में खड़ी राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंघ की गाड़ी पर भी पथराव किया गया। सिक्खों को बसों में से उतारकर मारा-पीटा गया। शाम के ४ बजे तक कुछ दुकानों को लूट लिया था और अन्य को आग लगा दी गई थी। शाम को ४ बजे लगभग आई एन. मार्किट के बाहर एक सिक्ख नौजवान की दसतार ३०-३५ लोगों ने उतारकर फाड़ दी तथा उन्होंने सिक्खों की मार-काट शुरू कर दी। यह दंगाकारियों की बड़ी टोली बन गई थी जो सफ़दरगंज हवाई अड्डे की ओर चल दी। फलाई ओवर के पास उन्होंने एक सिक्ख को कार में जाते देखा तो उन्होंने कार को रोक लिया तथा सिक्ख को घसीटकर बाहर निकाल लिया और उसकी कार तोड़ दी, उसको पीटा और गालियां निकालीं किंतु वह सिक्ख किसी तरह जान बचाकर निकल गया और दंगाकारियों का काफ़िला शोरगुल करता हुआ आगे की ओर बढ़ गया। रास्ते में उनको एक डाक गाड़ी मिली जिसको एक सिक्ख ड्राइवर चला रहा था। उसको जोर बाग सफ़दरगंज के पास आग लगा दी गई। गुरुद्वारा सिंघ सभा लक्ष्मी बाई नगर तथा गुरुद्वारा कदवई नगर आग से बुरी तरह जल रहे थे इसी इलाके की दो प्राइवेट बसों तथा दुकानों को लूटकर जला दिया गया। पुलिस खड़ी तमाशा देख रही थी। सिक्खों की दुकानों को लूटा जा रहा था। लकड़ी की दुकानों व ट्रकों को भी आग लगाई जा रही थी। शाम तक शंकर मार्किट, पांच कुआं रोड़, करोल बाग, सिरोजनी नगर तथा अन्य बहुत-से इलाकों में इमारतें बुरी तरह से जल रही थीं और लूटी जा चुकी थीं।

३१ अक्तूबर को लगभग ५ बजे राजीव गांधी अस्पताल में अपनी माता की लाश के पास पहुंचा तो उसने गुस्से में मुट्ठियां भींची हुई थीं। एच. के. एल. भक्त भी उसके साथ था। एक भारी इकट्ठ "इंदिरा गांधी अमर रहे!" के नारे लगा रहा था। ऊंचे स्वर में कह रहा था" खून का बदला खून से लेंगे!" रिपोर्ट ऑफ नेशन ट्रुथ अबाउट दिल्ली विजीलेंस के अनुसार 'भक्त' बाहर आया तथा लोगों के इकट्ठ को संबोधित करते हुए कहा 'आप लोग इस जगह पर खाली नारे ही लगाकर प्रार्थना करते रहेंगे? बस फिर क्या था, सैकड़ों गुरुद्वारा साहिबान अग्नि की भेंट चढ़ा दिए गए। गुरुद्वारा श्री रकाब गंज तथा चांदनी चौक पर भी हमला किया गया। कुछ सिक्खों की रेलवे स्टेशन पर मारकाट की गई तथा उन पर पथराव भी किया गया।

मार-काट करने के लिए बाहर के इलाकों में से किराए के दंगाकारियों को लाया गया। जिनकों लोगों को कत्ल करने का १०००-१०००/- रुपया व शराब दी गई। सिटीजन कमिश्न के एस. एम. सीकरी (जो भारत के भूतपूर्व जज

हैं) ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि ४ नवंबर तक दिल्ली में देश के कानून की उल्लंघना करते हुए किस प्रकार तोड़-फोड़ की गई। इसमें उन्होंने बहु-संख्यकों द्वारा पीड़ितों से कानून की उल्लंघना तोड़-फोड़, कत्ल तथा बलातकारों की बात की थी। उन्होंने राहत कर्मियों से भी बात की थी तथा उन्होंने अपने तुजुर्बे के अनुसार तुरंत रिपोर्ट तैयार करवाकर सरकार को भेजी, जिसमें उन्होंने कहा कि ऐसे व्यक्तियों जो कत्लोगारत कर रहे हैं, को किसी भी कीमत पर क्षमा नहीं करना चाहिए इनमें से कुछेक को पुलिस ने पकड़ तो लिया परंतु बाद में जमानत पर रिहा कर दिया गया जो इलाके में जाकर फिर से दहशत फैलाने लग गए। श्री एस. एम. सीकरी ने अपनी रिपोर्ट की कापियां प्रधान मंत्री तथा राष्ट्रपति को भेजी थीं किंतु आज तक इस पर कोई कार्यवाई नहीं हो सकी तथा न ही किसी दंगाकारी को सज़ा हुई है। कमिश्न ज़रूर बनते गए व रिपोर्टें तैयार होती गईं। इससे मात्र कार्यालयों की फाइलें ही मोटी होती गईं, अन्य कोई सशक्त परिणाम सामने नहीं आया।

सिक्ख कत्लेआम की जांच कर रहे नानावती कमिश्न आगे विश्व जरनलिस्ट स. खुशवंत सिंघ ने भी अपने बयान दर्ज करवाए थे, जिनके अनुसार ३१ अक्तूबर तथा १ नवंबर को हुए सिक्ख कत्लेआम से जो उनकी भावनाएं दर्दनाक रूप में ज़ख्मी हुई हैं, उनके दाग वह अपनी सारी उम्र महसूस करते रहेंगे। उनके अनुसार उन्होंने अपनी आखों से देखा कि ३१ अक्तूबर, १९८४ ई की दोपहर कनाट सर्कल में से काले धूंएं का एक घना बादल उभर रहा था। उस इलाके में सिक्खों की जायदादों को आग लगा दी गईं थीं। शाम को उन्होंने देखा कि एबेंस्डर होटल के बाहर सिक्खों की टैक्सियों की तोड़-फोड़ कर दी गई। ख़ान मार्किट में स्थित सिक्खों की दुकानें लूटी गईं थीं। उन्होंने वहां सामने सड़क पर एक अफ्सर अधीन दो कतारों में पुलिस कर्मचारियों को भी खड़ा देखा था जोकि हथियारबंद थे परंतु वो खड़े तमाशबीनों की तरह लूटमार देख रहे थे। आधी रात को 'खून का बदला खून से लेंगे!' के नारे गूंजने लग गए उन्होंने अपने बगीचे की चार दीवारी से देखा कि एक ट्रक में से लाठियां व मिट्टी के तेल के पीपे उतारे जा रहे थे। उस ट्रक में बहुत-से आदमी भी थे। इन लोगों ने सुजान सिंघ पार्क गुरुद्वारा साहिब पर हमला कर दिया। एक सिक्ख मकैनिक की दुकान में मरम्मत के लिए आई कारों को भी आग लगा दी गईं।

यह नवंबर, १९८४ ई दिल्ली में जो कुछ हुआ वह अचानक नहीं था बल्कि सोच-समझकर किया गया था। यह हिंदू-सिक्ख फिर्कू दंगे नहीं थे। बल्कि बहुत-से इलाकों में तो हिंदू भाइयों ने तो अपने पड़ोसियों के बचाव के लिए प्रयत्न भी किए। इसी तरह पंजाब में सिक्खों ने प्रतिशोध की भावना से कुछ नहीं किया। इस लिए शक की उंगली सिर्फ एक ही पार्टी की तरफ उठती है जिसने संकेत दिया था कि सिक्खों को सबक सिखा दो तथा पुलिस को यह संकेत दिया था कि जब सिक्खों को सबक सिखा रहे हों, उस वक्त किसी प्रकार का हस्तक्षेप न किया जाए।

इन चार दिनों के दौरान हुई घटनायों की जांच के लिए अब तक बहुत सारे सरकारी तथा गैर-सरकारी कमिश्न बनाए जा चुके हैं। इस विषय पर पुस्तकें भी लिखी जा चुकी हैं। गैर-सरकारी कमिशनों में हमारे देश के कई उच्चकोटि के कानूनदान भी शामिल रहे हैं, जिनमें जसटिस तारकुंडे, डॉ. कुठारी तथा सुप्रीम कोर्ट के भूतपूर्व जज एस. एम. सीकरी जैसों के नाम विशेष हैं। इन कानूनदानों ने अपनी

रिपोर्टों में जहां सिक्ख कत्लेआम की डटकर आलोचना की हैं, वहीं उन्होंने बहुत-से तत्कालीन संसद सदस्यों पर भी कातिलों को भड़काने के दोष लगाए हैं। इन कानूनदानों ने कहा कि कई संसद सदस्यों ने इक निर्दोष तथा अल्प-संख्यक कौम के खिलाफ़ हिंसा भड़काई थी, जो कभी भी हिंदू भाईचारे से अपने सम्बंधों को लेकर सुरक्षित महसूस नहीं थे करते। सरकारी कमिशनों ने कांग्रेस पार्टी को तथा सरकार को दिल्ली में लगभग ३५०० से ज्यादा तथा उत्तरी भारत के अन्य शहरों मे १०००० निर्दोष सिक्खों के कत्लेआम के दोषों से मुक्त कर दिया। यह विशाल पैमाने पर किया गया एक बहुत बड़ा घातक अपराध है, जिसके लिए सैंकड़ों अपराधियों को फांसी पर चढ़ा देना चाहिए था। आश्चर्य की बात यह है कि अभी तक एक भी व्यक्ति को सज़ा नहीं दी गई जबकि इंदिरा गांधी को कत्ल करने वाले स. बेअंत सिंघ तथा सतवंत सिंघ के साथ-साथ भाई केहर सिंघ को भी सज़ा सुनाकर फांसी के फंदे से लटका दिया गया है। स. बेअंत सिंघ भूतपूर्व मुख्यमंत्री पंजाब के कत्ल के दोष में हवारा तथा उसके साथियों को भी फांसी की सज़ा सुनाई जा चुकी है। फिर एक देश में दो कानून क्यों? क्यों नहीं लटकाया जा रहा फांसी पर सिक्खों के कातिलों को ?

३१ वर्ष गुज़र जाने के बाद भी दोषी स्वतंत्रता से घूम रहे हैं तथा पीड़ित परिवार इन्साफ के लिए कचहरियों में ठोकरें खा रहे हैं :

इस अदालत च बंदे बिरख हो गए, फैसले सुणदिआं सुणदिआं सुक्क गए।
आक्खो इन्हां नूं उजड़े घरीं जाण हुण, इह कदों तीक इत्थे खड़े रहणिगे। (सुरजीत पातर)

भक्त नामदेव जी

(पृष्ठ २८ का शेष)

तथा समुद्र का पानी मिलकर एक हो जाते हैं। जीव का अपने मूल से स्थायी सम्बंध स्थापित हो जाता है :

अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥
बिनु सावण घनहरु गाजै ॥
बादल बिनु बरखा होई ॥
जउ ततु बिचारै कोई ॥
मो कउ मिलिओ रामु सनेही ॥
जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥ (पन्ना ६५७)

भक्त नामदेव जी सच्चे ब्रह्मज्ञानी थे। उनका मार्ग विश्वास और आस्था, प्यार और श्रद्धा, सच और प्रेम का मार्ग था। उनकी बाणी में वहम, कर्मकांडों और भ्रम का त्याग करने, स्त्री जाति का सम्मान बरकरार रखने, गृहस्थ जीवन की उच्चता को कायम रखने का जो पैगाम दिया गया है वह अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है। गृहस्थी होना, प्रभु-भक्ति, परोपकार, धर्म में आस्था आपके जीवन के मनोरथ थे। आज हमें अत्यंत आवश्यकता है कि हम भी भक्त नामदेव जी की बताई गई शिक्षाओं को अपने जीवन में डालकर उनके आदर्शों के पथिक बनें और मानवीय जीवन को सफल बनाएं।

सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥
गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ॥
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥(पन्ना ८५८)

गुरबाणी चिंतनधारा : ९५

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

चौबीसवीं असटपदी

सलोकु ॥
पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥

सुखमनी साहिब की पावन बाणी के अंतिम सलोक में गुरु पंचम पातशाह जी ने उस परिपूर्ण परमेश्वर की आराधना करके उस निरंकार की प्राप्ति कैसे हो जाती है, इस रहस्य को बड़ी सहजता से उजागर किया है।

गुरु पंचम पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि पूर्ण प्रभु की आराधना करके जिसका नाम भी पूर्ण है उसे पा लिया है अर्थात् जिस भी प्राणी ने उस परिपूर्ण परमेश्वर की आराधना की उसने उसे (सहजता) से पा लिया है। गुरु पंचम पातशाह जी फरमान करते हैं कि मैंने भी उसी पूर्ण पारब्रह्म की आराधना करके उसे पा लिया है।

सांकेतिक रूप से गुरु साहिब हम कलयुगी जीवों को यही समझाना चाहते हैं कि जैसे उस परिपूर्ण प्रभु की आराधना के सदका मैंने उसे पा लिया है अर्थात् सब में बसता प्रतीत कर लिया है तुम भी उसी सच्चे एवं पूर्ण प्रभु की आराधना करके सर्वत्र में बसते प्रभु को पा लो।

वस्तुत: परिपूर्ण परमेश्वर का जाप हृदय घर में एक उत्साह पैदा करता है और जीव पुकार उठता है हे प्रभु! मेरे अंदर यह चाव पैदा हुआ है कि मैं गुरबाणी आज्ञानुसार *"गुण गावा दिनु राति नानक चाउ ऐहु ॥"* अपना जीवन यापन करूं।

असटपदी ॥
पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥
पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥
आस अनित तिआगहु तरंग ॥
संत जना की धूरि मन मंग ॥
आपु छोडि बेनती करहु ॥
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥
हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥
नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥ (पन्ना २९५)

२४वीं असटपदी की पहली पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने मन को प्रबोधित करते हुए यही समझाया है कि किस प्रकार सतिगुरु जी की शिक्षा सुनकर परम पिता परमेश्वर को सर्वत्र प्रतीत करना है। श्वास-श्वास उस मालिक को याद करते हुए समस्त चिंताओं से मुक्त हो जाना है, विकारों से दूर रहकर प्रभु-नाम रूपी खज़ाने पा लेने हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे मन! पूर्ण सतिगुरु का उपदेश श्रवण कर अर्थात् ध्यानपूर्वक गुरु की सीख को सुन। (इसके फलस्वरूप) ईश्वर को हाज़र-नाज़र जान अर्थात् उसे हर पल अपने निकट समझ यह एहसास और विश्वास बना। श्वास-श्वास उस पारब्रह्म परमेश्वर का सिमरन करो ताकि तुम्हारे मन के अंदर की समस्त चिंताएं खत्म हो जाए। हे मन! नश्वर पदार्थों की मन में उठती तरंगों को त्याग दे। संत जनों के चरणों की धूलि की मांग हृदय की गहराई से कर। आपा भाव गंवा कर अर्थात् अहंकार से दूर रह कर प्रभु चरणों में विनती कर इस

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : +९१९९२९७-६२५२३

प्रकार (हे जीव!) तूं साधसंगत में रहकर संसार रूपी विकारों की अग्नि के सागर को पार कर। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन संदेश देते हैं कि (हे जीव) प्रभु-नाम रूपी खज़ाने भर ले तथा सतिगुरु के चरणों में नत्मस्तक हो जा अर्थात् नाम रूपी दौलत का भंडार भर लो तथा पूर्ण गुरु को नमस्कार करो।

वस्तुत: पूर्ण गुरु का उपदेश श्रवण करके ईश्वर को प्रति पल अपने संग जानना चाहिए। क्योंकि गुरु का उपदेश हमारा मार्ग दर्शन करता है और मार्ग दर्शन करके प्रभु चरणों में जोड़ता है और प्रभु चरणों में जुड़ा मन सिमरन एवं चिंतन में लीन रहता है और जहां प्रभु-चिंतन होता है वहां चिंता का प्रवेश मार्ग ही बंद हो जाता है; तभी तो सूझवान चिंता छोड़ चिंतन करते हैं एवं आनंद में रहते हैं। चिंता करने वाला व्यक्ति या तो भूतकाल में रहता है अन्यथा भविष्य में, वर्तमान के पल की वह संभाल ही नहीं कर पाता जबकि प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि बीता हुआ पल वापिस नहीं आ सकता और आने वाले पल की ख़बर नहीं। वह आयेगा भी या नहीं। लेकिन यह भी निश्चित है जो वर्तमान को संभाल लेते हैं उनका भविष्य उज्ज्वल ही होगा।

बस ज़रूरत है तो श्वास-ग्रास परम पिता परमेश्वर को याद करने की। वैसे भी गुरबाणी आश्यानुसार हमारी बुद्धि में असंख्य बेशकीमती रत्न हैं अगर हम गुरु की एक शिक्षा पर भी अमल कर लें तो अमूल्य पदार्थ प्रकट हो जाते हैं यथा श्री गुरु नानक पातशाह की पावन बाणी :

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ (पन्ना २)

गुरमति में चिंतकों ने 'रत्न' वैराग्य का, 'जवाहर' नाम एवं ज्ञान का तथा 'माणक' श्रवण एवं मनन का प्रतीक माना है। अत: गुरु की एक सीख सुनने से ही हृदय में परमेश्वर के गुण पैदा हो जाते हैं।

आग की तरह तप रहे संसार रूपी भवसागर से पार उतरने का एकमात्र साधन गुरु की शरण है, जिसके फलस्वरूप प्रभु-नाम की प्राप्ति संभव हैं और यह वह खज़ाना है जिसे न जल डुबो सकता है न चोर चुरा सकता है और न ही अग्नि जला सकती है। पंचम पातशाह जी की पावन बाणी का यह संदेश है :

गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥
जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥ (पन्ना ६७९)

खेम कुसल सहज आनंद ॥
साधसंगि भजु परमानंद ॥
नरक निवारि उधारहु जीउ ॥
गुन गोबिंद अंम्रित रसु पीउ ॥
चिति चितवहु नाराइण एक ॥
एक रूप जा के रंग अनेक ॥
गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥
सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥
नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥

२४वीं असटपदी की दूसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने साधसंगत के महत्त्व को दर्शाया है कि किस प्रकार साधसंगत में उस परिपूर्ण सुखों के सागर प्रभु का सिमरन करने से परम आनंद आत्मिक अडोलता तथा अटल सुखों की प्राप्ति होगी और यही नाम ही जीवन का सच्चा आधार है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि (हे भाई!) साधू की संगत में आकर ईश्वर की वंदना करो अर्थात् प्रभु की भक्ति करो। जिसके फलस्वरूप आपको सच्चे सुख, शांति तथा सहज आनंद की प्राप्ति होगी। तुम गोबिंद के गुण गायन करो और नाम रूपी अमृत का पान करो। इससे नरकों से छुटकारा मिलेगा तथा जीवात्मा का उद्धार

होगा। हृदय में केवल एक प्रभु का सिमरन करो। वह प्रभु जिसका स्वरूप एक लेकिन रंग अनेक हैं अर्थात् जो निर्गुण, निराकार होते हुए भी सगुण रूप में अनेक रंगों में समाया हुआ है। वह परमेश्वर जीवों की प्रतिपालना करने वाला, जीवों को अपने अंदर धारण करने वाला दामोदर तथा दीनों पर दया करने वाला है। दुखों का समूल नाश करने वाला पूर्ण कृपालु है। गुरु पंचम पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि उस प्रभु का नाम पुनः-पुनः अर्थात् बार-बार स्मरण करो यही आत्मा का पूर्ण एवं वास्तविक आधार है।

वस्तुतः समस्त सुख ईश्वर के नाम में ही समाहित हैं। दूसरी पउड़ी की पहली पंक्ति में **'खेम'** शब्द का अर्थ प्रो साहिब सिंघ जी ने **'अटल सुख'** किया है। इस तरह चाहे अटल सुख हों चाहे साधारण सुख जो हमें दुनियावी पदार्थों से प्राप्त होते हैं स्थायी, अस्थायी, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक समस्त सुखों का दाता प्रभु का सिमरन ही है। गुरबाणी में प्रभु-नाम को समस्त दुखों को नाश करने वाला तथा सुखों का प्रगास करने वाला बताया है। पंचम पातशाह जी की बाणी में अन्यत्र इसी भाव के दर्शन होते हैं :

दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥
आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥१॥
(पन्ना २१८)

वह परिपूर्ण परमेश्वर पर दयालु है सभी दुख-कलेश निवृत्त करने वाला है ऐसे कृपालु प्रभु के चरण कमलों को हृदय घर में बसाकर रखने की पावन बाणी प्रेरणा देती है यथा :

हरि के चरण रिदै उरि धारि ॥
सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥१॥ रहाउ ॥
तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ ॥
करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥
नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥
(पन्ना ६२०)

अतः आवश्यकता है तो बस सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ प्रभु का ही आश्रय लेकर आठों पहर उस पारब्रह्म परमेश्वर का ही गुणगान करने की जो गरीब निवाज़ है, दुख हर्ता एवं रहमतों का सागर है।

उतम सलोक साध के बचन ॥
अमुलीक लाल एहि रतन ॥
सुनत कमावत होत उधार ॥
आपि तरै लोकह निसतार ॥
सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥
जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥
प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥
नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥

तीसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने संत पुरुषों की बाणी को अनमोल बताया है और उसकी तुलना अमूल्य रत्नों से की है। ऐसे अनमोल वचनों को श्रवण कर उस पर अमल करने वाला व्यक्ति स्वयं तो मुक्त होता ही है औरों को भी भवसागर से पार उतरवा देता है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि साधु पुरुष (गुरु) की बाणी सर्वोतम बाणी है। गुरु के वचन अनमोल रत्न हैं। इन अमूल्य वचनों को सुनने वाले एवं अमल में लाने वालों का उद्धार हो जाता है। जो इन वचनों की कमाई करता है अर्थात् अमल में लाता है वह स्वयं पार उतर जाता है तथा औरों को भी पार उतार देता है। जिसके हृदय घर में प्रभु का प्यार बस गया, उसकी संगत सफल और उसकी संगत के फलस्वरूप जीवन भी सफल हो जाता है। परमेश्वर के ऐसे भक्त की संगत के परिणामस्वरूप अंतःकरण में अनहद नाद बजने लगते हैं। जिसके

फलस्वरूप जीव अनहद शबद सुनकर आनंद मग्न हो जाते हैं। ऐसे महापुरुष (गुरु) के मस्तक से प्रभु प्रकट हो जाता है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि ऐसे गुरु की संगत से जीव का उद्धार हो जाता है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने गुरु वचन की कमाई करने वालों अर्थात् गुरु उपदेश को अमल में लाने वालों की अवस्था को बयान किया है कि किस प्रकार उनका सहजता से उद्धार हो जाता है। ऐसे महान पुरुष की संगत से जीवन सफल हो जाता है क्योंकि ऐसे महान पुरुषों के अंदर प्रभु प्रकट हो जाता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी यही भाव दर्शाया गया है :

दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥
घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥
गोविद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥
गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥ (पन्ना ५७८)

किस प्रकार ऐसे महान साधु के अर्थात् गुरु के चरणों में आकर नाम दान मिला और मानव जीवन का उद्देश्य सफल हो गया व जीवन में किसी तरह की कोई कमी न रह गई। गुरबाणी में इसी भाव के दर्शन अन्यत्र भी होते हैं :

पारब्रहमि निबाही पूरी ॥
काई बात न रहीआ ऊरी ॥
गुरि चरन लाइ निसतारे ॥
हरि हरि नामु सम्हारे ॥१॥ (पन्ना ६२३)

जीव के प्रभु शरण में आने और प्रभु शरण में आने से होने वाले बेअंत लाभ का भी ज़िक्र किया है कि कैसे करुणा निधान प्रभु की शरण में आकर जीव के समस्त वैर भाव मिट गए, विनम्रता का गुण हृदय में प्रवेश कर गया और गुरु की शरण में सेवा सफल हो गई। और यहां जीव के द्वारा किया गया व्यापार उस मालिक की दरगाह में प्रवान हो गया।

गुरु पातशाह चौथी पउड़ी में पावन फरमान करते हैं कि हे अकाल पुरख! यह सुनकर कि तूं शरणागत को शरण देने में समर्थ है (तेरी समर्थता) के कारण हम तेरी शरण में आ गए और कृपा निधान प्रभु ने कृपा करके हमें अपने साथ ही मिला लिया है। (अब हमारे) समस्त वैर भाव मिट गए हैं और हम सबके चरणों की धूलि बन गए हैं। (तेरे चरणों में आकर विनम्रता आई), जिसके फलस्वरूप नाम रूपी अमृत साधसंगत में आकर प्राप्त हो गया। गुरु ने हम पर अपार रहमत कर दी और सेवक की सेवा सफल हो गई!। अब हम समस्त माया के पर्दों और धंधों से मुक्त हो गए हैं। प्रभु-नाम को श्रवण कर उस परमेश्वर की महिमा का गायन कर रहे हैं। परमेश्वर ने दया दृष्टि कर दी और गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में (शुक्राणा करते हुए) पावन फरमान करते हैं कि (इस जगत में) किया हुआ हमारा व्यापार सफल हो गया और हमारी पूंजी दरगाह में प्रवान हो गई।

उपरोक्त पउड़ी में शरण आए की लाज रखने वाले करुणा निधान प्रभु के गुण को बहुत सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। गुरबाणी में अनेकों बार प्रभु की शरणागत आए प्राणी की लाज रखने के स्वभाव का वर्णन मिलता है यथा गुरबाणी प्रमाण :

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ (पन्ना ५४४)

यही नहीं जो वास्तव में उसकी शरण में आ जाता है वह सारे सुखों को पा लेता है क्योंकि वह सुखों के निधान (खज़ाने) की शरण में होता है और वह कृपालु प्रभु शरण आए जीव की तिल मात्र मेहनत भी व्यर्थ नहीं जाने देता क्योंकि शरण आया व्यक्ति सहजता से प्रभु गुणों का अंत:करण में ही गायन करता रहता है। पंचम पातशाह जी की बाणी का ही उदाहरण यहां उल्लेखनीय है :

जो सरनी आवै सरब सुख पावै तिलु नही भंनै घालिआ ॥
हरि गुण निधि गाए सहज सुभाए प्रेम महा रस माता ॥
नानक दास तेरी सरणाई तू पूरन पुरखु बिधाता ॥
(पन्ना ११२२)

ऐसे परिपूर्ण परमेश्वर की शरण में आने का मार्ग गुरु बताता है केवल बताता ही नहीं अपितु शरण आए जीव की बाजु पकड़कर उस रास्ते पर चला भी देता है और जिसके फलस्वरूप मानव जीवन जिसे बेशकीमती माना गया है को सफल बना देता है। गुरु की संगत का फल सर्वोतम है। श्री गुरु रामदास जी ने इस संदर्भ में अनेक ऐतिहासिक उदाहरणों से कलयुगी जीवों को समझाया है कि किस प्रकार वस्तुत: सतिगुरु पूर्ण गुरु के उपदेश को हृदय में बसा लेने से अनहद शबद की पांच प्रकार की ध्वनियां अंत:करण में ही सुनाई देने लगती हैं सर्वत्र परमात्मा का अनहद नाद गूंजता सुनाई देता है यथा गुरबाणी प्रमाण :

पंचे सबद वजे मति गुरमति वडभागी अनहदु वजिआ ॥
आनद मूलु रामु सभु देखिआ गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥
(पन्ना १३१५)

परमात्मा के चरणों में यही अरदास करें कि हम भी शबद गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी को पढ़-सुनकर हृदय में बसा सकें जिस इलाही बाणी के लिए गुरु साहिब ने गहरे तथ्य को एक ही पंक्ति में समझा दिया है कि जिसने किनका मात्र भी हृदय में बसा लिया उसकी महिमा को शब्दों द्वारा बयान नहीं किया जा सकता। सुखमनी साहिब जी की पावन पंक्ति है :

-किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥
ता की महिमा गनी न आवै ॥ (पन्ना २६२)
-सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥
अंम्रित नामु साधसंगि लैन ॥
सुप्रसंन भए गुरदेव ॥
पूरन होई सेवक की सेव ॥
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥
राम नाम सुनि रसना कहते ॥
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥
नानक निबही खेप हमारी ॥४॥ (पन्ना २९५)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने परमेश्वर के दयालु स्वभाव की महिमा को बयान करने के साथ-साथ यह भी स्पष्ट किया है कि संगत का गुण अत्याधिक है जैसा कि गनिका तोते को राम-राम पढ़ाती हुई पार उतर गई। अस्पृश्य कुब्जा कृष्ण भगवान की संगत पाकर बैकुंठ में गई। अजामल पापी ने पुत्र मोह में जब उसे नारायण पुकारा तो उसका उद्धार हो गया। इस प्रकार प्रेमा-भक्ति से अनेकों का उद्धार हो गया यथा गुरबाणी प्रमाण :

संगति का गुनु बहुतु अधिकाई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥
परस नपरस भए कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे ॥१॥
अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी करि नाराइण बोलारे ॥
मेरे ठाकुर कै मनि भाइ भावनी जमकंकर मारि बिदारे ॥२॥
(पन्ना ९८१)

बस ज़रूरत है तो केवल उसकी शरण आने की यह उसका बिरद है कि वह शरण आए की लाज सदा-सर्वदा ही रखता आया है, इसलिए तो सूझवान पुकार उठते हैं :

अगर खुदा नहीं तो खुदा का ज़िक्र क्यों ?
अगर खुदा है तो फिर फ़िक्र क्यों ?

अत: हमेशा समस्त चिंताएं और आसरे छोड़ कर केवल एक अकाल पुरख की शरण में आना है और उसकी शरण में आने के लिए हमें गुरबाणी से दिशा निर्देश लेकर उसके अनुसार जीवन बनाना है। ❂

Final

ख़बरनामा

जत्थेदार अवतार सिंघ और चीफ़ जस्टिस ऑफ इंडिया ने कैंसर की आधुनिक मशीनों का उद्‌घाटन किया

श्री अमृतसर : १९ सितंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर और चीफ़ जस्टिस ऑफ इंडिया हंडियाला श्री लक्ष्मी नारायण स्वामी दत्तू ने श्री गुरु रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज़ एण्ड रिसर्च अस्पताल वल्ला, श्री अमृतसर के कैंसर विभाग में इलेक्टा सीनर्जी लीनियर ऐक्सलरेटर और सी. टी. सिमूलेटर सोमैंटस डेफीनशन ए. एम. २० ओपन मशीन का उद्‌घाटन किया। उद्‌घाटन उपरांत जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि कमेटी ने चीफ़ जस्टिस ऑफ इंडिया को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की तस्वीर, लोई व सिरोपाउ देकर सम्मानित किया।

प्रैस विज्ञाप्त में जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने कहा कि सिक्खों की प्रतिनिधि जत्थेबंदी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर द्वारा श्री गुरु रामदास जी के नाम पर खोला गया, यह अस्पताल सिक्ख कौम की गौरवशाली संस्था है, जिस पर समूची कौम को गर्व है। उन्होंने कहा कि इस अस्पताल में हज़ारों की संख्या में कैंसर के मरीज़ इलाज करवाकर स्वस्थ होकर जाते हैं। उन्होंने कहा कि इस संस्था को समय का योग्य बनाने के लिए शिरोमणि कमेटी द्वारा जो भी आवश्यक सुविधाएं होती हैं चाहे वो मशीनरी हों या फिर कुछ अन्य मुहैया करवायी जाती हैं। उन्होंने कहा कि आज हम ने कैंसर जैसी घातक बिमारी का इलाज करने के लिए आधुनिक तकनीक वाली मशीनें मुहैया करवाई हैं। जिनमें सी. टी. सिमूलेटर सोमैंटस डैफीनशन ए. एस. २० ओपन मशीन की उपलब्धि यह है कि इससे कैंसर वाले मरीज़ों को दी जाने वाली सेकों की योजना तैयार की जाती है। यह मशीन बताती है कि मरीज़ के शरीर के किस भाग में कैंसर है। दूसरी मशीन जो इलेक्टा सीनर्जी लीनियर ऐक्सलरेटर नाम की है, इस मशीन द्वारा आई. एस. आर. टी., आई जी आर. टी., वी मैट और एस. आर. टी. द्वारा इलाज किया जाता है। उन्होंने कहा कि लगभग ३ एस. एम. तक कैंसर इस मशीन द्वारा दुरुस्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस मशीन की विशेषता यह है कि इससे मरीज़ के शरीर के दुरुस्त भाग पर कोई भी बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। पत्रकारों के प्रश्न का उत्तर देते उन्होंने कहा कि इस अस्पताल में मुख्य मंत्री पंजाब कैंसर राहत फण्ड सकीम २००९ से शुरू है। जिस द्वारा एक लाख तक की सहायता दी जाती है। इसके अतिरिक्त शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा कैंसर फंड की सकीम भी चलाई जा रही है। जिसमें शिरोमणि गु. प्र., कमेटी के अधिकारी भी अपनी तनख्वाह से हिस्सा डालते हैं। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा भी कैंसर पीड़ित मरीज़ों को २००००/- तक की सहायता दी जाती है। उन्होंने कहा कि इन मशीनों द्वारा इलाज का खर्च लगभग सरकारी अस्पताल जितना ही होगा। आगे से भी जो बन पाएगा ज्यादा से ज्यादा सहायता की जाएगी।

इस समय स. रजिंदर सिंघ महिता कार्यकारिणी कमेटी सदस्य, एडवोकेट स. भगवंत सिंघ सियालका सदस्य, स. हरचरन सिंघ मुख्य सचिव, डा. रूप सिंघ और स. मनजीत सिंघ, स. दिलजीत सिंघ बेदी, और बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा अतिरिक्त सचिव, स. सतिंदर सिंघ निजी सहायक, स. सकत्तर सिंघ सचिव, स. जोगिंदर सिंघ सचिव, डॉ. ए. पी. सिंघ अतिरिक्त सचिव डॉ. मीना सूदन प्रोफैसर मुख्य कैंसर विभाग और डा. गुरशरन सिंघ नारंग आदि उपस्थित थे।

ब्रिटेन सरकार द्वारा सिक्खों को दसतार सजाकर कार्य करने की अनुमति देना प्रशंसनीय :जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : २ अक्तूबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ब्रिटेन सरकार द्वारा सिक्खों को दसतार सजाकर कार्य करने की अनुमति देने को प्रशंसनीय कदम बताया है।

उन्होंने कहा कि दशम् पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा पांच ककारों के अतिरिक्त खालसा पंथ को दसतार की दात बख़्शकर एक विलक्षण पहचान दी है। उन्होंने कहा कि कलगीधर दशमेश पिता जी ने यहां सिक्ख को साबत सूरत रहने के लिए प्रेरित किया है, वहीं केशों की संभाल के लिए दसतार सजाने का आदेश भी दिया है। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि इस कानून को लागू करवाने के लिए इंग्लैंड के सिक्खों को चाहे लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा परंतु यह समूचे सिक्ख पंथ के लिए बहुत ही गौरव की बात है। इसलिए इंग्लैंड के सिक्ख प्रशंसा के पात्र हैं। उन्होंने इंग्लैंड की रोज़गार मंत्री प्रीति पटेल का भी दसतार सजाने सम्बंधी एलान करने पर धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि अब ब्रिटेन में सिक्खों को कार्य वाले स्थानों पर जबरन हेलमट पहनने के लिए नहीं कहा जाएगा और वह दशम् पिता जी द्वारा बख़्शिश दसतार सजाकर कार्य करेंगे।

पावन स्वरूप का अपमान करने वाले शरारती अनसरों को कदाचित भी बख़्शा नहीं जाएगा : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १३ अक्तूबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने कुछ अनजान शरारती अनसरों द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के स्वरूप के पावन-पवित्र पन्ने (अंग) ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब पातशाही दशम् बरगाड़ी के इर्द-गिर्द फेंकने की कड़े शब्दों में निंदा की है। उन्होंने कहा कि शरारती अनसरों ने पावन-पवित्र पन्ने फाड़ कर गुरुद्वारा साहिब के इर्द-गिर्द, गांव की गलियों और बस अड्डे आदि पर फेंककर घोर पाप कमाया है जो कदाचित बख़्शने योग्य नहीं, उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब सर्वसांझे गुरु है, इसमें गुरु साहिबान के अतिरिक्त सभी धर्मों के भक्तों एवं भट्टों की बाणी दर्ज है और प्रत्येक मनुष्य इसके समक्ष अपना शीश झुकाता है। उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी सांझीवालता और सरबत्त के भले का संदेश देती है परंतु कुछ सिर फिरे व्यक्ति बार-बार गुरु साहिब का अपमान कर देश की अमन और शांति को भंग करना चाहते हैं, जो कदाचित्त भी सहन नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मैंने स्वयं घटना उपरांत शिरोमणि गु प्र कमेटी के सदस्यों और अधिकारियों के साथ इस स्थान का दौरा किया है। उन्होंने कहा कि बरगाड़ी में स्थिति बहुत ही तनावपूर्ण बनी हुई है।

जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि इस अभाग्यपूर्ण घटना के साथ देश-विदेश में बैठे संपूर्ण सिक्ख समुदाए के लोगों में रोष और निराशा पाई जा रही है। उन्होंने इस घटना की निंदा करते हुए प्रशासन को कहा है कि इस घटना की बारीकी से पड़ताल करते हुए अपराधियों को गिरफ्तार करें और जुर्म बरामद होने पर उनको कानून तहित कड़ी से कड़ी सज़ा सुनाएं। उन्होंने केंद्र सरकार को अपील करते हुए कहा है कि जो व्यक्ति किसी धार्मिक ग्रंथ का अपमान करता है और देश में अशांति फैलाना चाहता है उसका कोई दीन-धर्म नहीं होता, वह देश का सबसे बड़ा दुश्मन है, इसलिए सरकार ऐसे जुर्म के लिए कोई कड़ा कानून बनाए जिससे ऐसे दरिंदों को नकेल डाली जा सके। उन्होंने समूची सिक्ख संगत को अपनी सद्भावना बनाए रखने की अपील की।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-११-२०१५